نحمده و نصلی علی رسوله الكريم

افضل الذكر لا اله الا الله محمد رسول الله

इर्फान व आगही के कई राज़ हैं उठाए
कई छट गए अंधेरे लो उजाले लौट आए

लो उजाले लौट आए

खाकपाए पीर फहमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारूक शाह कादरी
अल चिश्ती इफ्तेखारी **मारूफ पीर** अफी अनहो

تاج العارفین حضرت خواجہ شیخ محمد عبدالرؤف شاہ قادری الچشتی افتخاری

پیر فہمی مدظلہ العالی

TAJ-UL-AARFIN HAZRAT KHWAJA SHAIKH MOHAMMED ABDUL RAUF SHAH QADRI

AL CHISHTI IFTEKHARI **PEER FEHMI** MADZALLAHUL AALI

بسم الله الرحمن الرحيم

نحمده ونصلي على رسوله الكريم

أفضل الذكر لا إله إلا الله محمد رسول الله

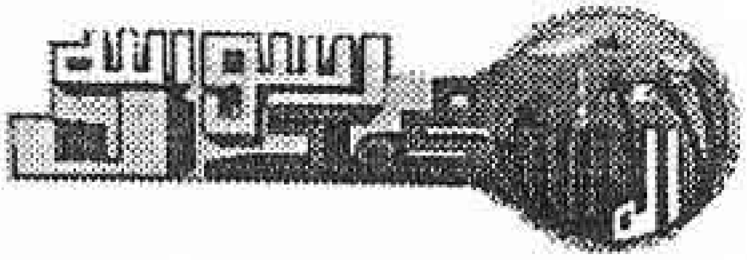

इर्फान व आगही के कई राज़ हैं उठाए
कई छट गए अंधेरे लो उजाले लौट आए

लो उजाले लौट आए

खाकपाए पीर फहमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारूक शाह कादरी
अल चिश्ती इफ्तेखारी **फारूक पीर** अफीअनहो

मिन जुमला हुकूक बहक्के मुसन्निफ महफूज हैं

अरकान

किताब का नाम : लो उजाले लौट आए

मुसन्निफ : ख्वाजा शेख मोहम्मद फारुक शाह कादरी अल चिश्ती इफ्तेखारी मारुफ पीर

नौय्यते अशाअत : बारे अव्वल

तादादे अशाअत : 500 (पाँच सौ)

मुकामे अशाअत : बमौकाए उर्से पीर आदिल, बीजापुर शरीफ, कर्नाटक।

तारीखे अशाअत : 21 मार्च 2009.
बमुताबिक २ ३ रब्बिउल आदिल 1430 हिजरी

कम्पोजिंग : डीसेन्ट क्रियेशन्स, : 9773039800 / 022 64180700

कीमते किताब : ४० रुपये

किताब मिलने के पते

- हजरत पीर फहमी, खानकाहे कादरी अलचिश्ती आदिल फहमी नवाजी, आदिल नगर, आकाशवानी, गेट नं. ७, मालवानी कालोनी, मलाड(वेस्ट), मुंबई - 95.
- अफसर शाह कादरी, भगतसिंह नगर नंबर- १, लिंक रोड, गोरेगाँव (वेस्ट), मुंबई - 104.
- अब्दुल्लाह शाह कादरी, गरीब नवाज नगर, कोकरी आगार, एस. एम. रोड, अॅन्टॉप हिल, मुंबई - 37.
- शेख शाहीन शाह कादरी, हाउस नं. 9-8-109/A/76, गोल कुंडा, सॉलेह नगर, कंचा, हैदराबाद.
- मुहम्मद मौला शाह कादरी, B-2/10/2, सेक्टर नं. 15, वाशी, नई मुंबई - 703.
- मुहम्मद सजिद शाह कादरी, हव्वाबी की चाल, ईदगाह मैदान, जोगेश्वरी (ईस्ट), मुंबई - 60.

नियाज़ शाह कादरी, मालवणी कालोनी, गेट नं 8 म्हाड़ा -43, साई कृपा चाल, D - 1 मलाड (वेस्ट) मुम्बई - 95

इंतेसाब

نحمدہٗ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم

लाखो अहसान व शुक्र उस रब्बे कायनात का, करोड़ो दुरूद व सलाम आकाए नामदार मदनी ताजदार सरकारे दो जहॉन मुहम्मद मुस्तफा सल्ललाहू अलैह वसल्लम पर व सद दर सद अहसान व शुकर पीराने पीर रोशन जमीर हजरत गौसे आजम दस्तगीर रजी अल्लाहू अनहो व ख्वाजाए ख्वाजगाँ ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाहे अलै व तमामी अवलिया व मशायखीन रिजवानल्लाह तआला अजमईन का जिनकी रुहानी इमदाद हर दम कदम पर शामिले हाल हैं।

इन्सान खुदा का मजहरे अतम है। इसलिए वह काबिलियत रखता है के सिफाते बशरी को फना करके खुदा में जा मिले और खुदा के सिफात हासिल करके बका के मर्तबा को पहुँचे। रसूल व पैगम्बर अलै सलाम खुदा के मजहरे खास होते हैं। हसूले मारफत के लिए इंसान को मुख्तलिफ जराए से गुजरना पड़ता है। मेरे आका व मौला पीर रोशन जमीर हजरत ख्वाजा शेख मुहम्मद अब्दुल ररुफ शाह कादरी अलचिश्ती इफ्तेखारी पीर फहमी मदजल्लू आली ने उनही रमूज से आगाही बख्श कर खिलाफते कादरिया आलिया खुलफाइया व खिलाफते चिश्तिया बहिश्तिया से सरफराज फरमाकर मसनदे रूशद व हिदायत पर फायज किया। इसी रूशद व हिदायत के जमन मे किताबे हाजा ''लो उजाले लौट आए'' है जो में अपने पीर व मुर्शिद की बारगाहे विलायत में नजर करता हूँ।

गर कबूल इफ्तेदज है इज्जो शर्फ

खाकपाए पीर फहमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारूक शाह कादरी अलचिश्ती इफ्तेखारी **मारुफ पीर** अफी अनहो।

नुक्ता : दुई अकल की इजाद है। यानी वहम व गुमान है। अकल गरमी को अलग, ठंडी को अलग देखती व जानती है। यह दोनो एक में देख नही सकती या यूँ कहो बरदाश्त नही कर सकती। जिसकी वजह से दुई का जनम होता है। हालांकि दोनों एक ही है। अगर हम दुनिया से गरमी का नामो निशान मिटा दें तो ठंडी खुद ब खुद खतम हो जाएगी। मगर अकल यह समझती है अगर गरमी को मिटा दे तो ठंडी रह जाएगी। मगर ऐसा हरगिज़ मुमकिन नहीं। जब तक नूर नही था तब तक अँधेरा नहीं था, चीज एक ही है मगर अकल इसको दो हिस्सो मे देखती है। अकल किसी भी चीज़ को पूरा नही देख सकती। अकल बुरे को अलग और अच्छे को अलग कर देती है। जबके वजूद दुई से बाहर होता है। मसलन वजूद के अंदर बहनेवाली कूवत की रव एक होती है । अगर मैं कहूँ के आपके पैर की उँगली को तोड़ दिया जाए तो क्या कुछ आँख को फर्क होगा ? तुम कहोगे के हरगिज़ नही होगा क्युँकि आँख अलग है और पैर की उँगली अलग है। मगर बाहर से कुछ फर्क मेहसूस ना हो पर अंदर से आँख को बहुत फर्क होगा क्युँकि अंदर से बहने वाली कुव्वते रव एक है और बड़ी बात यह है के तमाम वजूद खुलिए से बना है। चाहे आपकी आँख हो या आपके पैर की उँगली। इन खुलियात ने ही हस्बे जरूरत खुद ब खुद तरक्की करके उन सफात के मौसूफ बने। माँ के पेट में एक ही खुलिया होता है। वहाँ न आँख होती है न हाथ न पैर न दिगर आज़ा मगर जैसे ही दौरे तरक्कियात शुरु होता है तो खुलियात खुद को दोहरे बनाना शुरू कर देता है । जिसकी बदौलत तमाम आज़ा जाहीर होने लगते है । जितना एहसास का माद्दा आपकी उँगली मे है उतना ही ऐहसास का माद्दा आपकी आँख मे भी मौजूद है क्यूँकि दोनो एक खुलिये से ही तो पैदा हुए है। दुसरे लफ्जो में कहूँ तो उँगली

देख सकती है जिस तरह आँख देख सकती है। जितनी गहराई से आँख देख सकती है उतनी गहराई से जिस्म का हर खुलिया ऐहसास कर सकता है।

सवाल : तसव्वुफ को बुढापे मे सीखना चाहिए।

जवाब : तसव्वुफ जीने का हुनर सिखाता है और जीने का हुनर जवानी मे चाहिए बुढापे में सीखकर क्या करेंगे।

कौल : हर लफ्ज़ दुई से पैदा होता है।

नुकता : शऊर की दो किसमे है। एक 'मैं हूँ' का शऊर दूसरा 'हूँ' का शऊर। जब तुम पूरी तरहसे मिट जाओगे महज एक खाली सिफर हो जाओगे तब भी शऊर बाकी रहेगा, पर मैं फना हो जाएगा। 'मैं' का ऐहसास ही आदमी को हमेशा बाहर की ओर ढकेलता है। जैसे 'मैं' जा रहा हूँ, 'मैं' खा रहा हूँ।

कौल : बदलाव का नाम ही वक्त हैं । बदलाहट की तेज़ी ही वक्त की रफतार है।

कौल : हक एक है पर जानने वालो ने उसे अलग अलग ढँग से जाना है।

राज : राज़ क्या है ? नाम और अनाम के बीच मे एक होना है। इसी का नाम है राज़। जो कई होते हुए भी जो एक बना रहता है। उसे ही हम राज़ कहते है। राज़ का मतलब होता है जिसे हम जान भी लेते है और फिर भी नही जान पाते है। जिसे हम पहचान भी लेते है फिर भी वह अनजाना रह जाए। ला-इल्मी के उपर इल्म है। और इल्म के उपर राज़ है। जाहिल को यह गुमान है के वह नही जानता और

आलिम को यह गुमान है के वह जानता है। किसी का कौल है के जाहिल तो अँधेरे मे भटकता है पर आलिम इस्से बडे अँधेरे मे भटकते रहते है। जाहिल इसलिए भटकता है के वह नही जानता। और आलिम इसलिए भटकता है के मैं जानता हूँ जिसकी वजह से इसमे से आजज़ी खतम हो जाती है और तकब्बुर मुकाम कर जाता है। राज़ जानने का नाम नही बलके जान के ऊपर उठ जाना है। राज़ के मानी है के जो अँधेरे मे है वही उजाले मे है। पैदाइश व मौत एक है इसी को जान्ने का नाम राज़ है। जो राज़दॉ है उनका कौल हैं के 'मैं' को मिटाओ क्युँकि जब तक मै होगा तब तक राज़ को जानने का शौक व ज़ौक में उतना जोश ना होगा । 'मैं' के माने है मै जानता हूँ मुझे सब पता है और जैसे ही मैं को फना करेगा फ़ौरन राज़ को जानने का जोश बढ़ जाएगा। एक है इल्म से पहले का राज़, एक है इल्म के बाद का राज़। एक आँख वाला राज़ और एक नाबिना राज़ हैं।

कौल : सोने और जागने मे सिर्फ पलक के खुलने और बंद होने का फर्क है।

–: कसाफत और लताफत में फर्क :–

जो शए हमे हवास के जरिए या हवास से बनाए गए आलाजात के जरिए हमे मालूम हो या जिसे हम महसूस कर सके उसे कसाफत कहेंगे और जो बगैर हवासे खमसा के जरिए मालूम हो उसे हम लताफत कहेंगे।

''जिस आदमी मे राजो की समझ आ जाती है वह लताफत का दरवाजा खोल लेता है''

अगर मैं बगैर कान के आपको सुन सकूँ या बगैर आँख के

आप को देख सकूँ तो यह लताफत है।

करामात : करामात वह अमल है जिसकी वजह समझ ना आ सके क्युँके हर अमल की कोई न कोई वजह होती है। जैसे एक आदमी बीमार हो और डॉक्टर से दवा ले और ठीक हो जाए हम उसको करामत नही कहेंगे क्युँकि यहाँ ठीक होने की साफ वजह मालूम हो रही है । मगर कोई आदमी किसी बुजुर्ग के कदमो पर सर रखे और ठीक हो जाए तो उसे हम करामत कहेंगे क्युँकि यहाँ ठीक होने की वजह मालूम नही हो रही है । मगर इसमे भी वजह है। एक तो ऐसी है जैसे बिजली आपके जिस्म मे दाखिल होकर आपको झटका देती है या जिस्मानी निज़ाम को कुछ देर के लिए सुन्न कर देती है ठीक इसी तरह नेक आदमी की जिस्मानी बिजली इन्सानी बीमारी को ठीक कर देती है। जिसे आज रेकी कहते हैं। हकीकी करामत वह हैं जहाँ अमल और वजह एक हो जाए जहाँ दो की गुँजाइश ना हो।

कौल : जो ख्वाहिश से भरा है वह ही कही पहुँचना चाहता है।

कौल : नफसानियत से भरा हुआ मन जहाँ है वहाँ कभी नही होता और जहाँ नही है वहाँ सदा डोलता रहता है।

कौल : नफसानियत से भरा हुआ मन राज़ से वाकिफ नहीं हो पाता सिर्फ बाहर ही भटकता रहता है। कभी अंदर दाखिल नही हो पाता।

कौल : नफ्स हमेशा बदलाव पर जीता है।

कौल : सबसे बड़ी ख्वाहिश कोई ख्वाहिश ना होना।

कौल : इन्सान छोटी ख्वाहिश को बड़ी ख्वाहिश से (Replace) बदल देता है। यानी छोटी ख्वाहिश को उसी वक्त छोड़ता है जब उसके सामने कोई बड़ी ख्वाहिश हो।

नुक्ता : इन्सान जो चाहता है वही होता है यानी उसी ख्वाहिशात का जोड। अगर इन्सान की तमाम ख्वाहिशात झड़ जाए तो इन्सान क्या होगा सिर्फ एक सिफर, एक खला मगर उसी सिफर से ज़िन्दगी का दरवाज़ा खुलता हैं। आप एक मकान बनाते है, उसमें एक दरवाजा बनाते हैं। कभी ख्याल करके देखो के दरवाज़ा क्या है। दरवाज़ा एक सिफर है। दरवाज़े का मतलब है जहाँ से दाखिल हो जाना है। जहाँ कुछ भी नही है। कोई दीवार से दाखिल नही हो सकता क्युँकि वहाँ कुछ है। सिफर ही कामिलियत का दरवाज़ा है।

कौल : जिस शख्स को बदसूरती का पता नही होता उसे खूबसूरती का भी पता नही होता।

कौल : हम उसी बात पर जोर देते है जहाँ मुकाबिल पहले से ही पैदा हो चुका है।

नुक्ता : दुई के खत्म होते ही एक भी खुद ब खुद खत्म हो जाता है। लोग समझते है के दुई के मिट जाने के बाद एक बाकी रह जाएगा। मगर हकीकत मे ऐसा नही होता दुई की ही वजह से एक दिखाई पड़ रहा था। अगर हमे एक को बताना है तो हमे एक के सामने दो, तीन, चार लिखना होगा वरना एक का वजूद साबित नही हो सकता कोई इसे लकीर कोई कुछ समझेगा। पहाड़ में ऊँचाई और निचाई दोनो है मगर जब हम पहाड़ की उँचाई को खतम कर देंगे तो खुद ब खुद निचाई खतम हो जाएगी। क्युँकि ऊँचाई ही ने निचाई को पैदा किया था।

मुकामे वस्ल मे सोचो तो अल्लाह है ना बन्दा है
फकत एक नाम की है कैद कतरा है ना दरिया है

बंदे के मिटते ही खुदा भी मिट जाता है। जब तक बन्दा था तब तक अल्लाह था। जैसे कतरा दरिया मे मिट जाता है कतरा, कतरा नही रह जाता बलके दरिया हो जाता है और जैसे ही दरिया कतरा से वस्ल करता है तो दरिया दरिया नही रह जाता बल्के कतरा हो जाता है। जहाँ कतरा मिटा वहाँ दरिया खुद ब खुद मिट जाता है। फिर सवाल उठता है वस्ल क्यूँ? तो एक यह मानी है के एक कतरा में दरिया की कमी थी। दूसरा मानी है के दरिया मे भी एक कतरे की कमी थी और जैसे दोनो मिले फिर वही नही रह गए। जिस तरह कतरा मिट गया उसी तरह दरिया भी मिट गया। दोनो के मिट जाने का नाम ही वस्ल है। कतरे कतरे से दरिया बना है। अगर हम यूँ कहे तो गलत ना होगा के कतरा छोटा दरिया है और दरिया बडा कतरा है।

नुक्ता : बीमारी जिसम का हिफाजती खोल है। बीमारी तन्दुरूस्ती का ही हिस्सा है। निजामे जिन्दगी का इनहेसार ज़िद पर है। हर चीज़ अपने मुखालिफ से ही पहचानी जाती हैं। हर चीज अपने मुखालिफ चीज का ख्याल देती है। जिन्दगी मौत का ख्याल देती है। वजूद अदम का इसी तरह अदम भी वजूद का ख्याल देता है। जिस तरह जिन्दगी मौत का ख्याल देती है तो मौत भी जिन्दगी का ख्याल देती है। जिन्दगी है तो मौत है। जिन्दगी ही मौत का दरवाजा है। जब बात समझ में आ जाए तो इंसान न जिंदगी से भागेगा न मौत से घबरायेगा। इन्सान दो मे से एक को चुनता है। इन्सान चाहता है के तन्दुरूस्त रहे और बिमारी न रहे, जवानी रहे पर बुढापा न रहे, अच्छाई रहे पर बुराई न रहे। जब इन्सान एक को चुनता है जिसकी वजह से तनाव

आ जाता है। एक को पकड़ने और एक को छोड़ने के चक्कर में खिंचाव आ जाता है क्युँकि हर चीज एक दुसरे से जुड़ी हुई है। जैसे रात दिन से जुड़ा हुआ है या तो इन्सान दोनो को कबूल कर ले या दोनो को छोड़ दे तो पुरसुकून रह सकता है। हम चाहते है के लोग हमारी इज़्ज़त करे पर जैसे ही ये हम सोचते है फौरन ही बेइज़्ज़ती का दरवाज़ा खुल जाता है। बेइज़्ज़ती आती इसी वजह से है के हम इज़्ज़त चाहते है। जो इज़्ज़त के लिए तैयार है वह बेइज़्ज़ती के लिए भी तैयार हो जाए। चाहे कोई इन दोनो को पकड़े या ना पकड़े पर दोनो साथ-साथ है। साथ साथ भी नही बल्के एक ही चीज के दो सिरे है। मसलन जैसे अंदर की साँस और बाहर की साँस। कोई साँस अंदर ले और बाहर न छोड़े या बाहर छोड़े और अंदर ना ले तो मर जाएगा। बाहर छोड़ी जानी वाली साँस भी वही है जो अंदर ली गई थी। बज़ाहिर दो नजर आने वाली साँस एक ही है। बल्के जोडा है। दोनो एक दूसरे को मदद करते है जिससे वजूद की ह्यात कायम होती है।

नुक्ता : जवान के पास ताकत होती है। पर मुकम्मल तर्जुबा नही होता। और बूढो के पास मुकम्मल तजुर्बा होता है पर ताकत नही होती। यही कुदरत का निज़ाम है। जवान को ताकत की जरूरत है जिससे वह और तजुर्बा हासिल करे और बूढा मरनेवाला है और मरकर कब्रस्तान जाने वाला है। कब्रस्तान जाने के लिए किसी ताकत की जरूरत नही होती।

नुक्ता : हम आला शख्सियत उसे मानते है जिस्ने दीन व दुनिया मे बहुत कुछ किया हो। हमारा पैमाना यह है के वो क्या करता है ''वो क्या है'' इससे हमे कोई गर्ज़ नही होता। हमारा आला मानने का

पैमाना ही गलत है जिसकी वजह से कोई भी आला बन बैठता है। जिसका होना कोई असर पैदा ना करे तो उसका बयान क्या असर पैदा करेगा। मक्नातिस जहाँ होता है एक कुव्वते कशिश का दायरये निज़ाम खुद ब खुद वजूद मे आ जाता है। जो लोहे के जर्रात उस दाएरे के अंदर होते है खुद व खुद खिंचे चले आते है। अगर मक्नातिस को खुद जाना पड़े तो समझ लो वह मक्नातिस ही नकली होगा। कोई अमिल अमल से बड़ा नही होता। जिस बुजुर्ग को देख कर चोर चोरीन छोडे तो उस बुजुर्ग के बयान से क्या खाक चोरी छोड़ सकता है। कोई बुजुर्ग किसी अमल को अपनी तरफ़ मनसूब नही करते मगर घमडी शक्स हर अमल को अपनी 'अना' से जोड़ देता है हत्ता के वह अमल भी जो नही करता है। मसलन मैं साँस लेता हूँ, मैं बिमार हूँ, मै जवान हूँ, मैं बूढ़ा हूँ। ये तमाम बातें जहालत के अँधेरे मे रहने से पैदा होती है। मगर जो हकीकत के इल्म से अरासता होता है उसे खबर हो जाती है के फाइले हकीकी कौन है? अगर किसी बुजुर्ग से कोई ऐसा अमल सादिर हो जाए जो खरकेआदात मे शामिल हो तब भी वह बुजुर्ग यहीं कहेंगे के करामत की नही जाती बल्के करामत हो जाती हैं।

कौल : जिन्दगी एक लम्बे अमले जारिया का नाम है। जहाँ कोई ना कोई अमल ज़हूर मे रहता है। गुस्सा करना, प्यार करना, साँस लेना, जागना, सोना, वगैरा।

कौल : हर खोज़ वही दोबारा खोज है। ऐसी कोई खोज ना थी जो जानी ना गई हो पर जिन्होने भी जाना था वह इतने बुलन्दी पर थे की वो खोज उस वक्त लोगो की समझ में न आ सकी और कही खो गई जिस की वजह से दोबारा खोज करना पड़ा।

फिर जैसे ही हम सामान हटाएँगे वह खाली जगह दोबारा जाहिर हो जाएगी यह नही के वो कही बाहर से आएगी।

कौल : जो आदमी अफवाह सुन कर लौट जाए उस की कोई मंज़िल नही होती।

इशारा : मुराकबा अकल की उपरी सतह को तोड़ने के लिए किया जाता है। उपरी सतह जैसे ही टूटती है तो अंदर दाखला हो जाता है। फिर अंदर की आँख से हर चीज साफ नज़र आने लगती है।

नुक्ता : इन्सान दो हिस्सो मे बँटा हुआ है। पहला हिस्सा समझ का हैं दूसरा हिस्सा करतापन का है। मगर उलझन यह है के जो हिस्सा समझ का है जो समझ लेता है मगर इसके पास कोई काम करने की ताकत नही होती। जिस के पास काम करने की ताकत होती है उस के पास कुव्वते समझ नही होती। अगर हम ना समझ बनते है तो उस हिस्से मे दाखला हो जाता है जहाँ समझ का गुज़र नही। आहिस्ता आहिस्ता करके दोनो हिस्सो मे आना जाना शुरु हो जाता है फिर एक दिन वो आता है के दोनो हिस्से एक हो जाते है। जहाँ इन्सान मुकम्मल व कामिल हो जाता है।

कौल : गुस्सा पागलपन है पर वक्ती तौर पर।

राज़ : इन्सान अपने असल चेहरे को पहचाने के असल चेहरा कौन सा है। वो जो माँ के पेट में बना, या वो जो बचपन मे था, या वो जो जवानी मे था, या वो जो बुढापे मे था। माँ के पेट से लेकर आखिरी साँस तक करोडो मर्तबा चेहरा बदल जाता है। फिर कैसे मालूम करे के हमारा असल चेहरा कौन सा है।

जवाब : असल हमारा वह चेहरा है जब हमारा वजूद भी ना था। खुदा की भी असल सूरत क्या है यह भी उसी वक्त मालूम होगी जब

तुम अपनी असल सूरत तलाश कर लोगे।

नुक्ता : अभी तक इन्सान ने किसी भी चीज को नही देखा बल्के हर चीज का अक्स देखा है। हम अक्स देखकर गुमान मे पड़ जाते है के हमने उस चीज़ को देखा हलांकि हकीकत इस से अलग है। जब हम किसी चीज को देखते हैं तो उस चीज का अक्स हमारी आँख पर गिरता है। फिर उस अक्स को दिमाग देखता है और हम समझते है के हम उस चीज को देख रहे है। मसलन किसी आदमी को अगर पीलिया हो जाए तो उस आदमी को हर चीज पीली नजर आयेगी। जबके उस चीज का रंग कुछ और ही क्यों न हो ? एक हकीकत ये भी है के सौ आदमी में से हर दूसरे आदमी की देखने की कुव्वते रंग में फर्क है। किसी को एक खास रंग नजर नही आता। इसी तरह हमारी आवाज का अक्स कान पर पड़ता है। इसी तरह हमारे अहसास का अक्स जिल्द पर पडता हैं।

इशारा : खुदा को माननेवाले कहते है के खुदा है और खुदा को न माननेवाले कहते है के खुदा नहीं है और हम समझते है के या तो खुदा है या नहीं है फैसला हो गया। मगर इन दोनों बातों के अलावा भी सच कुछ और हो सकता है। एक खुदा है, दूसरा खुदा नहीं है, तीसरा खुदा है भी और नही भी, चौथा कुछ और जिस के बारे में कहा नहीं जा सकता। मसलन कोई कहे के मटका नहीं बल्के मिट्टी है या कोई कह सकता है के वह न तो मटका है न तो वह मिट्टी है, या कोई कह सकता है के वह मटका भी है और वह मिट्टी भी है या कोई यह भी कह सकता है के यह दोनो के अलावा कुछ और भी हैं।

कौल : हर साँस पर हम मरते हैं और जीते हैं।

इशारा : जो साँस अंदर आ रही है वह बाहर जाने के तरफ इशारा है और जो साँस बाहर जा रही है वह फिर अंदर आने के लिए हिम्मत जुटाना हैं क्योंकि जो साँस बाहर की तरफ जा रही हैं उससे फेफड़े खाली हो जाते है जैसे ही फेफड़े खाली हो जाते तो उनमे फिर से भरने की ताकत पैदा हो जाती हैं।

इल्मे नफ्सियात : इंसान के अंदर जो चल रहा है उसका जिसमानी हरकात से पता लगाया जा सकता हैं। मसलन कोई औरत किसी आदमी को पसंद न करती हो तो उस आदमी से बात करते वक्त उसकी कमर थोड़ी सी पीछे की ओर झुकी होगी। अगर कोई आदमी दुकान पर कपड़ा ले रहा है तो दुकानदार आदमी की आँख की तरफ देखता है के इसकी आँख किस कपड़े पर ज्यादा देर तक रहती है और बात समझ में आ जाती है। माहिरे नफ्सियात का कहना है के तीन सेकंड से ज्यादा किसी की ओर देखना गोया उसकी जिंदगी में मुदाखलत करना हैं।

इल्में नफ्सियात : इंसान लफ्जो से इस तरह बंध गया है, के खुद अपने से बात करने के लिए भी लफ्जों का सहारा लेता हैं। जबके अल्फाज दूसरो तक अपनी बात को पहुँचाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। एक आदमी जो रोजाना सलाम करता है और जवाब देता है मगर एक दिन सलाम करना या सलाम का जवाब न दे तो लोगो का इस आदमी को देखने का जो नजरिया था वह पूरा बदल जाता हैं। फिर लोग कहते है के इस को बहुत घमंड आ गया है। थोड़ा माल क्या आ गया साहब का तेवर बदल गया। सिर्फ एक लफ्ज के लिए हम उस आदमी की पूरी सवाने उमरी बदल देते हैं। ये है लफ्जों का असर। हर कोई जितना हो लफ्जो को ज्यादा से ज्यादा दिमाग मे

जमा करने की कोशिश में लगे रहते हैं ताके लोगो पर मेरी बात का ज्यादा से ज्यादा रौब जम सके।

कौल : इस दुनिया में इंसान से ज्यादा कम अक्ल कोई नहीं है एक मानी में।

औरत का राज़

औरत का राज अँधेरो का राज हैं। जो औरत का राज समझा वो खुदा का भी राज समझ सकता हैं। मर्द के 'नहीं' के माने 'नहीं' के होते है मगर औरत के 'नहीं' के माने 'नहीं' के भी होते है और 'हाँ' के भी होते हैं। एक एटम बम से भी ज्यादा ताकत एक औरत को बच्चा पैदा करने में लगती हैं। एक मर्द का बाप बनना रस्मी है गोया उस ने किसी फेल का आगाज कर दिया मगर इस फेल को अंजाम तक पहुँचाना सिर्फ औरत का काम हैं। इसीलिए औरत का माँ बनना रस्मी नहीं बल्के फेले हक हैं। आज साइंस ने इतनी तरक्की की है के वो मर्द के स्पर्म को हजारो साल तक सँभाल सकता हैं। एक आदमी मरने के दस हजार साल बाद भी बाप बन सकता है पर माँ बनने के लिए औरत का जिंदा होना जरूरी हैं। आदमियो ने हजारो इजादात किए पर औरत की सिर्फ एक इजाद है वह है किसी को जिंदा पैदा करना । कुदरती निजाम के ऐतबार से अगर सौ लड़किया पैदा होती है तो एक सौ सोलह (११६) लड़के पैदा होते है। बड़े होते होते एक सौ सोलह (११६) लडको में से सिर्फ सौ (१००) लड़के जिंदा रह जाते हैं और १६ लडके मर जाते हैं। इस तरह तादाद बराबर हो जाती है। औरत मर्द के मुकाबले में कुछ बरस ज्यादा जिंदा रह सकती है और मर्द के मुकाबले कम बीमार होती है। औरत बगैर कुछ किए सब कुछ कर सकती है, पर आदमी

को कुछ करने के लिए भी कुछ करना पड़ता है। औरत बगैर कहे वो कह सकती है जो आदमी लफ्जों का जखीरा रख कर भी नहीं कह सकता। औरत में हर चीज कबूल करने का कुदरती माद्दा होता है और आदमी में हमला करने का माद्दा होता हैं। खुदा को पाने का राज भी औरत के राज में जम हैं। खुदा को कोई हमला करके जीत नहीं सकता बल्के औरत की तरह जेर होकर अपने दिल का अगर दरवाजा खोल दे तो खुदा खुद बखुद इसके दिल में दाखिल हो जाता है। पुर खामोश इंतजार एक औरत कर सकती है मर्द नही। औरत को जब भी इज्जत की नजर से देखा गया तो इसलिए के वो माँ है। औरत माँ के मुकाम की वजह से जितनी इज्जत पाई उतनी इज्जत वह किसी की बीवी बनकर न पा सकी। आज भी समाज औरत को अगर किसी खास एवार्ड से नवाजता है तो वह है माँ, जैसे मदर टेरेसा, उम्मुल मोमिनीन वगैरह। जब लड़का पैदा होता है तो इसके सेक्स हॉरमोन (Sex Harmone) बाद में बनना शुरू होते हैं। मगर जब लड़की पैदा होती है तो इसके तमाम अंडे वह साथ लेकर पैदा होती हैं। यानी लड़की मुकम्मल पैदा होती है और लड़का बाद में मुकम्मल होता हैं। इसलिए लड़की में एक तरह का सुकून होता है और लड़के में एक तरह की बेचैनी होती हैं। लड़के को पुरसुकून बनाने के लिए तरीके ढूँढ़े जाते हैं और लड़की को बेचैन करने के लिए जरिया तलाश किया जाता हैं। इसकी बहुत गहरी वजह है के लड़की जिस सेक्सकोरोम से पैदा होती है उसके खुलिये (Cell) "XX" होते है यानी दोनो एक होते है और लड़का जिस सेक्सकोरोम (Sex Chrome) से पैदा होता है उसका एक खुलिया (Cell) "X" और उसका दूसरा खुलिया (Cell) "Y" होता है। वह दोनों बराबर नही होते । औरत में तवाजन (Bal

ance) होता है यानी एक "X" है तो दूसरा भी "X" हैं । मगर आदमी में तवाजन (Balance) नहीं होता क्योंके दोनों खुलिये मुतजाद जुदा होते है। औरत की खूबसुरती का राज भी इसी "XX" में हैं। इसकी एक जैसी रफ्तार से खूबसूरती बढ़ती है मगर मर्द की रफ्तार एक जैसी नही होती इसलिए मर्द की वैसी खुबसूरती तरक्की नहीं पाती जैसा के औरत की खूबसूरती में बात हैं। औरत के वजूद को बनानेवाले 48 एटम है वह पूरे हैं 24+24 करके और आदमी को बनानेवाले 47 हैं। बस ये एक की कमी आदमी को जिंदगी भर दौड़ाती हैं इस दुकान से उस दुकान। जमीन से चाँद तक जो एक कम है वह पूरा होना चाहता हैं। औरत के इसी तवाजन के वजह से इन में हर चीज की कुबूलियत का माददा मर्द के मुकाबले में ज्यादा, बहुत ज्यादा होता हैं। औरत का माँ बनना इसका फैलाव है और बाप के लिए महज बाइसे फिकर।

अंधेरे का राज

अंधेरे के मानी है जिसको देखा न जा सके। अंधेरे में जो भी चीज होगी वह अंधेरे के परदे में छुपी होगी। नूर को लाया जा सकता है। नूर को फना है पर अंधेरे को फना नहीं क्योंके अंधेरा तब से है जब से नूर का नाम व निशान न था। रोशनी को एक कमरे से दूसरे कमरे में ले जा सकते है पर अंधेरे को कोई एक जगह से दूसरी जगह पर नहीं ले जा सकते। कोई चिराग को फूँक कर बुझा सकता है मगर सारी दुनिया की ताकत भी मिलकर अंधेरे को नहीं बुझा सकती। अंधेरे के एक मानी खाली के भी है गोया अंधेरा अपने में मुकम्मल खाली होता है इसलिए अंधेरे के बावजूद भी कमरे में सामान रखा जा सकता हैं। अंधेरे से वहदत का जहूर हुआ और उजाले से कसरत

का। अंधेरे में ही हर बीज नशोनुमा पाती हैं। रहमेमादर के अंधेरे में ही बच्चा परवरिश पाता है। अंधेरे के एक मानी नहीं के भी हैं। साइंसदानो के पास चाँद, सूरज, सितारे व दिगर सय्यारो से जमीन का दरमियानी फासला नापने का जो पैमाना मुकर्रर किया है वह है रोशनी की रफतार। जैसे सूरज की रोशनी जमीन पर ८ मिनट २० सेकंड में आती हैं। फी सेकंड ३ लाख किलोमीटर का पैमाना मुकर्रर किया गया हैं। इसी ऐतबार से हर सितारो की दरमियानी पैमाइश की जाती हैं। मगर जिसका अहाता और जिसकी पैमाइश नहीं की जा सकती इसको साइसदाँ अपनी जबान में कुछ नहीं. (Nothing ness) कहते हैं। यहाँ "नहीं" से मुराद नहीं नहीं है बल्कि इसकी पैमाइश हिसाब से बाहर हैं। अंधेरे को कभी मालूम नहीं किया जा सकता के इसकी पैमाइश क्या है? इसलिए अंधेरा भी नहीं के दायरे में शामिल हैं।

नुक्ता : हसद, कीना, बुगज, गुस्सा, फरेब तमाम तर आदते खबीसा हमारे में गफलत की वजह से दाखिल हो पाते हैं। हमारी बेहोशी का मरकज और सबब हमारा मैं पना व अनानियत हैं। जब हम किसी मुकद्दस मुकाम पर जाते है तो हमारा कल्ब एक अजीब किसम का सुकून महसूस करता हैं। फिर जब हम वहाँ से चले जाते है तो वह सुकून गायब हो जाता है जैसे के था ही नहीं। इस की वजह ये है के जितनी देर तक हम इस मुकद्दस मुकाम पर थे उतनी देर तक हमारा वजूद, "मैं पना" से खाली था। इसीलिए हमारे वजूद में सुकूनियत थी। हमारा मैं पन "वजूद" में फसाद बरपा करता हैं। कभी सोचा है जब हम सो जाते है और फिर उठते है तो एक तरह की ताजगी महसूस करते है जो सारे दिन में काम आती हैं। इस की भी

यही वजह है के जब हम सो जाते है तो मैं पन भी सो जाता हैं। फिर सुबह कूवत मिल जाती है। हमारा तकब्बुर हर वक्त बदलता रहता है मगर इतनी तेजी से ये बदलाव होता है जिस की वजह से हमे इसके बदलाव की खबर नहीं हो पाती है। बच्चा माँ के पेट में २४ घंटे सोता रहता है। कुदरते कामिला बच्चे को २४ घंटे सुलाए रखती है ताके इसको अपने ''मैं'' की खबर न हो जाए वरना वजूद की तामीर रूक सकती हैं। फिर बच्चा दुनिया के आब व हवा में आता है और बाइस (२२) घंटे फिर २० घंटे ऐसे करते करते वह जवानी में ८ घंटे और बुढापे में ४ घंटे पर आ जाता हैं। जब ४ घंटे में आ जाता है तो वजूद में तोड़ने का काम, शुरू हो जाता हों। बिल आखिर मौत वाके हो जाती है। तकब्बुर भी कुदरती है जिस तरह बीमारी भी कुदरती है, जहर भी कुदरती है। मगर हम ज़हर भी पीना चाहते है और मरना भी नहीं चाहते जो ज़हर पीयेगा वह जरूर मरेगा।

कौल : हर ख्वाहिश इंसान को बाहर से परेशान करती है मगर उम्मीद इंसान को अंदर से परेशान करती हैं।

नुक्ता : आयते कुरानी है ''जान लो अल्लाह के जिक्र में दिलो का सुकून हैं।'' हर जाकिर की यही शिकायत होती है के हमे सुकून नहीं मिला ऐसा क्यों होता है ज़रा समझे। जब जाकिर जिक्र करता है तो इसका सारा ख्याल सुकून पर होता है के इतनी देर से जिक्र कर रहा हूँ सुकून नहीं मिला बल्कि और बेचैन हो जाता हैं। यही वजह है के वह राज जो आयते कुरानी में है समझ में नहीं आता। हम सुकून के लिए ज़िक्र करना चाहते है जबके राज़ ये है के ज़िक्र में सुकून हैं। बात तो एक जैसी, मालूम होती है पर ज़मीन व आसमान का फर्क हैं। यानी सुकून को कोई पैदा नहीं कर सकता न कही बाज़ार में

मिलता हैं। बल्कि जब ज़ाकिर ज़िक्र में खो जाता है तो सुकून खुद - ब - खुद पैदा हो जाता हैं।

इशारा : गैर मामूली इन्सान कौन हैं?

हर आदमी अपने आप को मामूली समझना नहीं चाहता बल्कि गैर मामूली ही समझता हैं। हकीकत में गैर मामूली इंसान वो है जो अपने को मामूली समझता है। यही वह सिफत है जो एक आम आदमी को खास कर देती हैं।

इशारा : बच्चा दुनिया में आकर जो पहली चीज़ लेता है वो साँस है। कोई बच्चा साँस लेता हुआ पैदा नहीं होता आकर साँस लेता है और कोई इंसान जब दुनिया से रुख्सत होता है तो जो चीज़ आखिर में छोड़ता है वो भी साँस हैं। कोई इंसान साँस लेता हुआ दुनिया से नहीं जाता । इसीलिए कहा जाता है के ज़िंदगी एक दायरे के मांनिद है जहाँ से शुरू वहाँ पर खतम भी हैं। याद रहे ज़िंदगी में कुछ भी सीधा नहीं पर हम हर चीज़ को सीधा देखना चाहते हैं इसीलिए चूक जाते है। ज़िंदगी की रफ्तार दायरानुमा हैं। सिर्फ ज़िंदगी की रफ्तार ही नहीं बल्कि ज़मीन, चाँद सूरज हर एक की रफ्तार दायरानुमा हैं।

इशारा : जिस चीज़ को भी हम बार-बार महसूस करते है वो चीज़ मर जाती है। अगर मुझको किसी से भी प्यार है तो मैं दिन में चार दफा पता लगा लेना चाहता हू के प्यार है या नहीं। पूँछ लेना चाहता हूँ, ज़रिया तलाश करता हूँ जिसके ज़रिए कहलाया जा सके के हाँ प्यार हैं। चाहनेवाले ही चाहत का कत्ल कर देते हैं। ये बात महज़ प्यार पर ही नहीं बल्कि ज़िंदगी के तमाम पहलुओं पर भी ये बात लाजिम आती हैं। अगर किसी को ये बात बार-बार याद आती हो के मैं अफज़ल हूँ तो वह सख्श खुद अपने हाथो से अपनी अफज़लियत

को मिटा देता हैं। आखिर ऐसा क्यों होता है के जिस चीज़ को हम बार-बार महसूस करते है वह मिट जाती है तो इसकी वजह है - पहली वजह ये है के हम उसी चीज़ को बार-बार महसूस करना चाहते है जिस पर हमारा भरोसा नही होता। अंदरूनी तौर पर जो हमें भरोसा नहीं है इसी भरोसे की जाँच करने के लिए हम बार-बार ऐसा करते हैं। अक्सर ज़ाकरीन व मुराकिब और मुराकबे से ताल्लुक रखनेवालो की ये शिकायत है के जैसे हमें पहले मज़ा आता था अब हमें वैसा मज़ा नहीं मिलता क्योंके ज़ाकिर व शागिल उसी मज़े को दोबारा पाने के लिए वही अमल बार-बार करते है जिसका पहली दफा तर्जुबा हासिल किया था। बार-बार वही अमल दोहराने की वजह से वह अमल बासा हो गया और बासा होने की वजह से उस अमल को महसूस करने का जो माद्दा था वो खतम हो जाता हैं। मसलन अगर हम एक ही किसम का अतर रोज़ाना लगाते है तो भला सारी दुनिया को इसकी खबर लग जाए पर हमको इसकी खबर नहीं होगी। हमारे नाक के नथने इस खुश्बू को फरामोश कर देते हैं। अगर किसी खूबसूरत रंग को भी बार-बार देखते रहे तो आपकी आँख का तालुक बार-बार देखने की वजह से टूट जाता हैं। फिर खूबसूरत रंग भी बेरंगा नजर आता हैं। इसके ये माने नहीं के आप की देखने की कूवत खत्म हो गई बल्कि जो चीज़ हमें मिल जाती है हम उसे भुला देते हैं। फिर हमारे हवास भी उसको महसूस नहीं करते। आदमी भी अजीब है फिर जो लुत्फ मिला था वो भी खो जाता हैं। जो लुत्फ इसको मिलता है उसको बार-बार पाने के लिए खोजता हैं। ज़िंदगी में सारे हादसात उल्टे होते हैं। जो आदमी पाए हुए मज़े को दुबारा पाने की कोशिश नहीं करता इसको वो मज़ा रोज़-रोज़ मिल जाता हैं। हमारे ज़िंदगी में इतना गम क्यों हैं। क्योंके हम गम को पाने के लिए

कोई कोशिश नहीं करते हैं। इसलिए जो गम का मज़ा है वो कायम रहता है और हम खुशी को बार-बार पाने के लिए कोशिश करते हैं और वह नहीं मिलती। इंसान जिसको छूता है वो मिट जाता हैं। जिसके पीछे भागता है मिलता नहीं, जो माँगता है वो खो जाता है। इसीलिए जिंदगी कोई किताबे हिसाब नहीं बल्कि गहरा राज़ है जो इस राज़ को समझ लेता है वही इसको जी पाता हैं।

इशारा :- जिस चीज़ को भी हम मेरा कहते है उसी वक्त हम उस चीज़ के गुलाम बन जाते है यानी मालिकियत कायम करते ही गुलाम हो जाते हैं। जितनी बड़ी मालिकियत होगी उतनी बड़ी गुलामी होगी। इसी लिए कई बुजुर्गों ने बादशाहत को तर्क कर दिया। इन्होने हुकूमत को नहीं छोड़ा बल्कि अपनी गुलामी को छोड़ा। हुकूमत छोड़ना आसान है बनिस्बत एक भिखारी के भीख माँगने के कटोरे से। एक बादशाह हुकूमत छोड़ सकता है मगर एक भिखारी अपने भीख माँगने के कटोरे को नही छोड़ सकता। कटोरे की गुलामी इतनी छोटी है जिसको भिखारी देख नहीं सकता। अपने अलावा किसी पर मालिकियत का दावा करना गुलामी हैं।

इशारा : जब कोई अमल कामयाब हो जाए तो खुद को ओझल कर लो इससे पहले के दिल में ये ख्याल पोख्ता हो जाए के ये अमल मैंने किया हूँ और तकब्बुर उसे बर्बाद कर दे। मगर हम उल्टा करते है जब हम नाकाम होते है तो ओझल हो जाते है ताके लोगो को हमारी नाकामी की खबर न लगे।

कौल : तमाम ख्वाहिसात का दरवाज़ा जिस्म हैं।

नुक्ता :- हर पैदा होनेवाला बच्चा मकामे वहदत मे पैदा होता है मगर

ये मकामे वहदत इसके ला शउरी में होती हैं। बच्चा जब पैदा होता है तो उसे किसी फर्क का पता नहीं होता। इसके जिस्म और शउर में कोई लकीर फर्क की नहीं होती। जिस्म और शउर एक ही वजूद की तरह बढ़ते है मगर ज़िंदगी की ज़रूरतें, तहजीब, समाज, हिफाज़त, जिस्म और शउर में फर्क पैदा करना शुरू कर देता है। बच्चे को अगर भूख लगती है तो भी हमे उसे सिखाना पड़ता है के जब भूख लगे उसी वक्त खाना मिले ये ज़रूरी नहीं। भूख को रोकना भी ज़रूरी है। जब नींद आए बिस्तर मिल जाए ये भी जरूरी नही। प्यास लगे और पानी मिले ये भी जरूरी नहीं। हर चीज़ पर काबू रखना भी सिखाना पड़ता हैं। जैसे ही बच्चे में काबू रखने की काबिलियत आ जाती है उसी वक्त उसे ये इल्म हो जाता है के मैं अलग हूँ और जिस्म अलग है क्योंके जिस्म को भूख लगती है और मैं भूख को रोक लेता हूँ। जिस्म को नींद आती है और मैं नींद को रोक सकता हूँ। जिसे मैं रोक सकता हूँ उससे मैं अलग हो जाता हूँ। जैसे - जैसे बच्चे में काबू करने की काबिलियत में तरक्की होती जाती है वैसे - वैसे जिस्म और शउर में दरार पड़ना शुरू हो जाती हैं। वो दरार रोज-बरोज बड़ी होती चली जाती हैं। ये दरार जितनी बड़ी होती जाती है उतना वजूद के साथ एक होना मुश्किल होता जाता हैं। जिसे अपने वजूद के साथ भी एक होना मुश्किल हो गया हो उसे इतने बडे रब्बुल आल्मीन के साथ एक होना और मुश्किल हो जाता हैं। चंद तर्जुबात व हालात के पेशे नजर बच्चे की भलाई के लिए जो तालीम व तर्बियत दी जाती है ताके हालात जब खुशगवार न हो सब्र व जब्त और काबू का माद्दा होना चाहिए। उम्र के साथ-साथ तकाजो में भी इजाफा होगा। इन माँगो को पूरा करने के लिए वो कोई गलत राह अख्तियार न कर ले इसीलिए ऐसी तर्बियत की अशद जरूरत होती

है जो नसल दर नसल चली आ रही है। मगर यही तर्बियत तमाम जिंदगी का निजामे मरकज बन जाती है। धीरे-धीरे ऐसा लगता है के जो माँग कर रहा है वह अलग मालूम होता हैं। और जो रोक रहा है वो अलग मालूम होता हैं। ख्वाहिश अलग और अकल अलग मालूम होने लगती हैं। अकल और ख्वाहिश जैसे ही दो मालूम होने लगते है हमारे अंदर दो हिस्से हो जाते है। फिर हम पूरी जिंदगी उनहीं दो हिस्सो की कश मकश में परेशान होते रहते हैं। ख्वाहिश अपनी माँग करने लगती है और अकल इसको काबू करने लगती हैं। धीरे-धीरे पूरा वजूद आपस में तकसीम होना शुरू कर देते है। नाफ के नीचे का हिस्सा ख्वाहिश से जुड़ जाता हैं। और नाफ से ऊपर का हिस्सा अकल से जुड़ जाता हैं। इसीलिए हम जेरेनाफ वाला हिस्सा हमेशा छुपाए रखते हैं। हमारी पहचान का निशान हमारा सर बन जाता है जहाँ पर हमारी अकल होती हैं। जो इंसान अपने जिस्म को कसीफ रूह और रूह को लतीफ जिस्म समझ पाता है वही दुई को खतम कर पाता हैं। फिर वहदत का जो अहसास होता है वो ऐन शउरी में होता हैं।

नुक्ता : जो लोग जिंदगी का मकसद तलाशते है, वो जिंदगी को जी नहीं पातें। उनकी पूरी जिंदगी इसी सवाल के घेरे में गुजर जाती है के आखिर जिंदगी का मकसद क्या हैं। पर एक तल्क हकीकत ये भी है के जिंदगी का कोई मकसद नहीं बल्कि जिंदगी ही मकसद हैं। अगर कोई आदमी जवाब तलाश कर लाता है के जिंदगी का मकसद खुदा को पाना है तो फिर सवाल वही होगा के फिर खुदा को पाने का क्या मकसद । इसीलिए मैं कहता हूँ के कोई भी मकसद जिंदगी से बाहर नहीं हो सकता। मगर हमारी बेवकूफी हर वक्त कोई न कोई

मकसद ढूँढ लेती हैं क्योंके हमने समझदार आदमी की ये निशानी मान ली है के समझदार आदमी कोई भी काम बगैर मकसद के नहीं करता । जरा खेलते हुए बच्चो से पूछो के तुम क्यों खेल रहे हो तो वो बच्चे खामोश हो जाएगें क्योंके बच्चे खेलने के लिए खेलते है। इनका खेलने का कोई मकसद नहीं होता और हम खेल भी बगैर मकसद के नहीं खेल सकते । जब खेल भी किसी मकसद के लिए खेला जाता है तो वहाँ हार और जीत के माने बदल जाते हैं। जिसे भी जीना है वो आज ही में जी सकता हैं और मकसद के मानी है के कल में जीना। कल में कोई जीया है न जी सकता हैं। कल के मानी है जो अभी है नहीं। जो अभी है यही है, मौजूद हैं। इसी में जीया जा सकता हैं। मेरे कहने के ये भी मानी नहीं के किसी आदमी को कल ट्रेन पकड़ना है वो आज ही ट्रेन पकड़े या हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाए । कल की ट्रेन का टाइम-टेबल आज ही बनाना होगा। मगर टाइम टेबल बनाते वक्त इस लम्हे को भी जीए के मैं टाइम टेबल बना रहा हूँ लेकिन हम कल की ट्रेन के लिए आज पूरा दिन परेशान रहते है। अगर हम डूबते हुए किसी आदमी को बचाते है तो अभी इसके बचाने की खुशी भी हासिल न हुई थी के हम हजारो ख्यालात दिल में ले आते है के किसी ने हमको देखा के नहीं देखा। कल के अख्बार में हमारे कारनामें का जिक्र होगा के नहीं होगा। थोड़ी-सी खुशी भी कल के नजर हो जाती हैं। जिसे भी जिंदगी का मजा पाना है वो जीने में ही पा सकता हैं। जिस तरह खाने का मजा खाने में ही पाया जा सकता है न के खेलने में और खेलने का मजा खेलने में ही पाया जा सकता है न के खाने में। जो आदमी जीने के लिए जीयेगा वही जीने का सुख पा सकता हैं। वही जिंदगी की खुशिया ले सकता है जैसे ही

ये बात समझ में आ जाए के जिंदगी ही अपना मकसद है यानी जीना ही मकसद है वैसे ही सवाल का रूख बदल जायेगा। तब हम ये नहीं पूछेंगे के किसलिए जीए, तब हम पूछेंगे के कैसे जीए? ''कैसे'' से ही रुहानियत पैदा होती है। इस्लाम पैदा होता है, तसव्वुफ का जहूर होता है, साइस वजूद में आता है, तमाम अंबिया कराम का नुजूल होता हैं।

नुक्ता : खुदा को जानने निकले है वो खुदा को जान नहीं सकते क्योंके खुदा को जाना नही जा सकता। इसलिए के जिसे हम जान लेते है इसकी एक शक्ल बनकर हमारी जानकारी में कैद हो जाती हैं। खुदा हर कैद से मुबर्रा है, खुदा जो है जिसे हम छूं नहीं पाते, देख नहीं पाते जिसके होने से इंकार न किया जा सके, वो ऐसे मौजूद है जैसे कही भी न हो, जो तमाम जान लेने के बाद भी बाकी रह जाए वो खुदा है।

कौल : आदमी उसी से मुहब्बत कर सकता है जिससे नफरत कर सकता हैं।

नुक्ता : पागल होने का राज खुद से बाहर की दौड़ हैं। जितना आप पागल हो जायेगे उतने ही दुखी हो जायेगे। दुख की जगह का नाम ही जहन्नुम हैं। किसी ने कुछ कह दिया हम इसी के पीछे दोड़ने लगते है। रात की नींद दिन का चैन हराम कर देते हैं। कोई तरक्की कर रहा है तो हम दौड़ने लगते है। जो खुद से बाहर जूआ लगायेगा वो हार जायेगा। बाहर की कोई चीज मिलती नहीं फिर पागलपन ही रह जाता हैं।

नुक्ता : गुस्से के बारे में हम हमेशा सोचते है के गुस्सा बाहर से आता

है बल्के गुस्सा हमेशा अंदर ही से आता हैं। हमारे अंदर का बरतन सदा गुस्से से भरा रहता हैं। मगर बिला वजह हमने गुस्सा किया तो लोग हमे पागल समझेगे। इसलिए गुस्से को बाहर निकालने के लिए कोई न कोई बहाना ढूँढ लेते हैं। इस बात को एक तर्जुबे के जरिए समझ सकते हैं। एक आदमी को दस दिन के लिए एक कमरे में बंद कर दो वो आदमी चार-पाँच दिन में ही कमरे के अंदर के बरतन पर अपना गुस्सा निकालना शुरु कर देगा। फिर आखिर में जब उसे कुछ न मिले तो खुद पर गुस्सा करते हुए मिल जायेगा और हो सकता है के जब बाहर आए तो एक पागल और इसमे कुछ फर्क महसूस न हो।

सवाल : जिस तरह हमने दिगर चीजो का मजा लिया है क्या हम गुस्से का भी मजा चख सकते है?

जवाब : गुस्से का भी मजा चखा जा सकता है। जब गुस्सा पूरी तरह से आ जाए तो थोड़ी देर के लिए आँख बंद करके अंदर गुस्से की लिज्जत को महसूस करे तो मालूम होगा के हमारे अंदर की ताजगी खत्म हो चुकी है और हलक से लेकर छाती तक एक बासापन, एक सुखापन हैं। इसिलिए गुस्से के वक्त आदमी को ज्यादा प्यास लगती हैं। अगर गुस्से के मुकाबले में हम प्यार की लिज्जत को महसूस करे तो ऐसा महसूस होगा गोया अंजानी अंदेखी मीठी मिश्री हमारे अंदर घुल रही हैं।

राज : मेरा जीना ही मरना है मेरा मरना ही जीना है
यहाँ मरने से पहले बका का सामान लाया हूँ

हम रोज - रोज जीने के नाम पर मर रहे है और कहते है के मौत अचानक आयेगी पर मौत कभी अचानक नहीं आती। इस कायनात

में कुछ भी अचानक नही होता। मौत भी अचानक नहीं आयेगी बल्कि रोज-रोज तरक्की पाती है। मौत कोई अचानक होनेवाला हादसा नहीं दर हकीकत एक लंबा अमल (Process) है। पैदाइश से ही मरना शुरू हो जाता हैं। पैदा होते ही हमारी नाफ को काटा जाता हैं। मौत की शुरूवात ही नाफ से होती हैं। मरने के दिन वो अमल मुकम्मल हो जाता हैं। मौत हादसा नहीं बल्कि तरक्की पजीर चीज हैं। इसलिए हम ये नहीं कह सकते के मौत मुस्तकबिल में होगी बल्कि अभी हो रही हैं। हम घंटा भर बैठते है तो हम घंटा भर और मर चुके होगे। जिंदगी का एक घंटा कम हो जायेगा। दूसरी बात मौत कोई बाहरी हादसा भी नहीं है जो हमारे ऊपर से या बाहर से आ जाती हैं बल्कि मौत का जहूर भी हमारे अंदर ही होता है। अगर ये बात हमारे समझ में आ जाए के मौत अचानक नहीं बल्कि एक लंबा अमल है और मौत कभी बाहर से नहीं आती बल्कि अंदर से ही होती हैं। अगर ये बात ख्याल में आ जाए तो हमे पता चलेगा के हमारी पूरी जिंदगी रोज-रोज कई शक्लों में मरती हैं। आँख देख-देखकर मिटती है और फना होती हैं। कान सुन-सुनकर फना होते हैं। कुव्वते लज्जत रोज लज्जत ले लेकर बिखर जाती हैं। मरते है हम जी जीकर मरना ही हमारे जीने का इंतेजाम हैं। उसी में हम घिस जाते हैं। उसीमे में हमारे सारे आजा उखड़ जाते है, टूट जाते है। जिस तरह कोई आला मुसस्सल काम करते करते घिस जाता है, टूट जाता है। बड़े मजे की बात है के आँख की मौत इसके देखने में है जबके आँख को इसीलिए बनाया गया के वो देखे। आँख हमेशा रंग व रोगन को देखने के लिए तड़पती है क्योंके यही आँख की गिजा हैं। आँख देख-देखकर थक जाती हैं। एक आले के मानिंद घिस जाती है, फिर

इस्तेमाल के लायक नही रह जाती। बुढ़ापे की वजह से आँख कम देखती है ऐसा नही बल्कि बहुत देख चुकी है इसलिए कम देखती है। बूढ़े के कान बूढ़े होने की वजह से नही सुनते ऐसा नहीं है बहुत सुन चुके होते है, काम कर चुके होते है, थक गये होते हैं, आराम का लम्हा आ गया होता है। कान का आला इस्तेमाल में पूरी तरह से आ चुका होता हैं। इसके यही माने हुए के जितना आँख देखती है उतना ही वह मरती है, जितना कान सुनता है इतना ही कान बेकार हो जाता है। जितना हम छूते है उतना ही छूने की कूवत फना होती हैं। जितना हम लिज्जत लेते है उतना ही लिज्जत लेने की कूवत बिखर जाती हैं। हासिले मतलब ये है के हर हवास अपनी मौत की कोशिश में लगा हैं। हमारी पूरी जिंदगी खुदकुशी के तर्ज पर हैं। दो - तीन घंटे कम्प्युटर या फिल्म देखने से आँख थक जाती है जबके आँख का काम ही देखना है। फिर इसकी थकान की वजह क्या हैं तो जरा गौर करना जब हम कम्प्युटर या फिल्म देखते रहते है तो आँख मुसस्सल खुली रहती है जबके आँख दिनभर में पलक झपकती रहती है जिससे के बार-बार ताजी रहती हैं। पलक का झपकना देखने के सिलसिले को तोड़ देता है। कई मुसव्विर अंधे हो जाते है हालाँके होना ये चाहिए था के रोज-रोज रंगो को देखने की मस्क से आँखो के देखने में इजाफा होना चाहिए था। क्योंकि आदमी रोजाना की मस्क से और तेज हो जाता है मगर हवास का मामला कुछ उल्टा होता है क्योंके जिस हवास का हम ज्यादा इस्तेमाल करते है वो हवास औरों के मुकाबले में जल्दी मर जाता है। मगर हमारे बुजुर्गो के पास इन हवासो को जवान रखने का राज मौजूद हैं। जिस आदमी ने भी अपने हवास को ताजा और जवान रखा हो वो मरते वक्त भी

मौत की लिज्जत ले सकता हैं। मौत के रंग को देख सकता हैं। वो मौत को भी छू सकता हैं। वो मौत को भी महसूस कर सकता हैं। लेकिन हमारे मरने से पहले ही हमारे हवास मर चुके होते है जिसकी वजह से हमे मौत का अहसास नहीं होता। हमारे हवास के बदौलत ही हमारी याददाश्त सलामत रहती है, इसीलिए मरते वक्त याददाश्त खो जाती है। इसीलिए आज भी हम इस सवाल को दोहराते है के मौत क्या हैं? हमारे हवास में इतनी भी बेदारी नहीं के हम रोजाना होनेवाली मौत को भी महसूस कर सके। जिसे इसकी हल्की सी भी खबर हो जाती है वो बका का राज पाने निकल जाता है। जो मौत की लिज्जत को महसूस नहीं कर सकता वो जिंदगी की लिज्जत को भी महसूस नहीं कर सकता। हमारा हर हवास हमारे दोहरे रास्ते हैं। हर हवास के दो रूख है जैसे हमारी आँख बाहर भी देख सकती है और हमारे आँख के अंदर वो आँख भी है जो अंदर भी देख सकती हैं। हमारे कान बाहर भी सुनते है और कान के पास एक बातिनी कान भी है जो अंदर भी सुनता है। अगर हम बाहर के कान को पूरी तरह से बंद कर ले तो हमे एक धक-धक की आवाज साफ सुनाई देती है जो के हमारे दिल की आवाज हैं। इसी तरह हम आँख को बंद कर ले तो वो रंग भी नजर आयेगे जो बाहर नजर नहीं आते। इसी तरह हर हवास हमारे अंदर महसूस करने का तर्जुबा रखता हैं। चूंकि हम बाहर इस कदर उलझे रहते है के हम भूल ही जाते है के अंदर भी बातिनी हवास के तर्जुबे का एक आलम था जो बिना खुले ही रह गया। हासिले मतलब ये है के आँख बाहर के रंगो को देख-देखकर अंधी हो जायेगी मगर जो बातिन की आँख है वो भी बिना खुले ही रह जायेगी। इसीलिए हर बुजुर्ग ने इस बात पर जोर दिया है के आँख

बंदकर, कान बंदकर, लब बंदकर यानी अपने हवासे जाहिरा को बंद कर क्योंके जाहिर की आँख, बंद करते ही बातिन की आँख हरकत में आ जाती हैं। बाहर के कान को जो आराम देगा वो बातिन के कान से सूते सरमदी सुन सकता है। मुराकबे की हालत ऐन शिक्मे मादर की हालत है जबके बच्चा माँ के पेट में होता है तो इसके कुदरती तौर पर हवासे जाहिरा बंद रहते हैं और हवासें बातिना खुले रहते हैं जिस की वजह से वह माँ की हर हरकत को बातनी तौर पर अहसास कर लेता हैं। जितना जिंदा वह माँ के पेट में होता है उतना जिंदा वह दुनिया में आकर नहीं होता। बच्चा माँ के पेट में ऐसा होता है जैसे कोई आबे ह्यात के दरिया में हो। जिस मुराकबे में ऐसी कैफियत न हो वो मुराकबा मुराकबा नही हो सकता है । बल्कि कुछ और हो सकता हैं। जिस आबे ह्यात का हमने नाम सुना था इसकी लिज्जत ऐन मुराकबे की हालत में मिलती है के जो मरता है वो मैं नहीं हूँ बल्के वो मेरा आला जिस्म है, मेरी मौत नामुम्किन है। मुराकबा ह्यात व मौत का खुलासा हैं। बहरेहाल किसी आदमी के एक हवास में खराबी हो जाए तो दिगर इसके हवास खुद व खुद तेज हो जाते है। मसलन कोई अंधा आदमी है मगर इसकी सुनने की ताकत दिगर आदमियो से ज्यादा होगी । उसकी महसूस करने की कूवत दिगर से ज्यादा होगी क्योंके उसके एक हवास की कूवत दिगर चार हवासो में मुंतकिल हो जाती है। इंसान के मद्दे मुकाबिल परिंदो में तीन हवास होते है जिनसे पाँच हवास का काम लेना हैं। इसलिए परिंदो के हवास इंसानो के हवास से ज्यादा तेज होते हैं। इसी तरह अमीबा कीड़ा जिसके पास सिर्फ एक ही हवास होता है इसके छूने का आलम फिर क्या होगा? ठीक इसी तरह जब हम हवासे जाहिरा को

बंद कर देते है तो हवासे जाहिरा के तमाम कूवते हवासे बातिना में मुंतकिल हो जाती हैं। इसी से अंदाजा लगाए के फिर बातिनी हवास का आलम क्या होगा। जितनी देखने की जरूरत है उतना देखे अगर जरूरत न हो तो आँखे बंद कर ले। ठीक इसी तरह हर हवास का इस्तेमाल करे ताके ये कूवत सफरे बातिन में काम आए।

कौल : जाहिरी हवास की कूवत को भी बिला वजह खर्च करना असराफे अजीम है।

नुक्ता : ख्वाहिश को छोड़ने की ख्वाहिश भी नई ख्वाहिश को पैदा करती है। जब हम ख्वाहिश से ख्वाहिश को काटने की कोशिश करते है तो ख्वाहिश और तेज हो जाती हैं। अगर हम ख्वाहिश को छोड़ने की बजाय ख्वाहिश को समझने की कोशिश करे तब हमें ख्वाहिश को छोड़ने की जरूरत नहीं पड़ती बल्कि ख्वाहिश खुद-ब-खुद खो जाती है।

कौल : उजाले ने ही अंधेरे को पैदा किया है। जब तक उजाला न था तब तक अंधेरे का वजूद ही न था।

कौल : सियासत खराब नहीं बल्कि सियासत हमेशा ऐसे लोगो के हाथ मे गई जो खराब ही थे। जिन्होंने सियासत का गलत इस्तेमाल किया जिसकी वजह से सियासत बदनाम हो गई ।

नुक्ता : 'मैं' को मिटाया नहीं जा सकता क्योंके हम जिसको मिटाने निकलते हैं हम उसको अपनी पूरी ताकत दे देते हैं जिसकी बदौलत वह और ताकतवर बन जाता हैं और हम उसको मिटाने निकलते है जो है ही नहीं। 'मैं' को मिटाने की कोशिश ही 'मैं' को

जिंदा रखती हैं। 'मै' को मिटाया तो नहीं जा सकता। हाँ 'मैं' को जाना जा सकता हैं। मैं को समझा जा सकता है के मैं क्या है और 'मैं' कहाँ हैं ?

रियाज : ख्याल करे के हमारे वजूद के अंदर एक तराजू है जिसके दो पल्ले हमारी छाती की ओर है। जिसका काटा हमारे दोनों अबरों के दरमियान हैं और जिसका पकड़ने का आखिरी सिरा (हुक) हमारे दिमाग में हैं। जब ये तराजू वजूद में कायम हो जाए तो फिर इसपर हमेशा नजर रखे के कोई हरकत तो नही हो रही हैं। कोई पल्ला नीचे ऊपर तो नहीं हो रहा हैं। हमारे अंदर किसी भी किस्म की तबदीली आते ही पल्ला नीचे ऊपर होना शुरु कर देता हैं। कोई हमारी तारीफ करे या हमे गाली दे तो फौरन तराजू हरकत में आ जाता है। इसलिए हमेशा ख्याल जमाए के दोनों पल्ले बराबर रहे। अगर किसी किस्म की तबदीली होती है तो फौरन तराजू पर ख्याल को जमाते ही दोनो पल्ले साकित हो जाते हैं।

कौल : खुदा इतना बड़ा है के उसके बारे में भी बताने के लिए अल्फाज छोटे पड़ जाते हैं।

नुक्ता : हमारे हर अल्फाज अधूरे है और जिसकी तरफ इशारा किया जाना है वह पूरा है यानी खुदा और कोई अल्फाज पूरे हो भी नहीं सकते क्योंके लफ्ज जिस अकल से पैदा होते है वो भी अधूरी है और अकल भी पूरी हो नहीं सकती क्योंके हमारा वजूद कुल की हैसियत रखता हैं और अकल जुज़ हैं। हमारी जिंदगी का अकल एक छोटा सा हिस्सा हैं। अकल से बड़े है हम। अकल से वसी हैं हम। हमारा जो होना है उसमे अकल भी एक बूँद है लेकिन वो हमारा

पूरा समंदर नहीं है। इसलिए जुज से जो भी पैदा होगा वो जुज ही होगा। छोटा ही होगा बड़ा हो नहीं सकता। दूसरी बात हमारे हर अल्फाज हवास से मुतासिर होते है मगर हमारे हवास भी महदूद है और जिसको महसूस किया जाना है वो लामहदूद हैं। हकीकत में हमारी आँख इतनी छोटी है के हमें हर चीज टुकडो में देखनी पड़ती हैं। किसी भी चीज को हमारी आँख बेक वक्त एक साथ नहीं देख सकती। ठीक इसी तरह हमारे हवास और इनके तर्जुबात का भी यही हाल हैं। इसीलिए अल्फाज भी जिन हवास से मुतासिर होते है वो भी महदूद की ही खबर दे सकते है लामहदूद की नहीं। लामहदूद को हद में बाँधना गोया लामहदूद में नुक्स पैदा करना हैं। हर अल्फाज हमारी सोच का इजहार करते है और सोच दुई का मसदर हैं। इसीलिए हमारे हर अल्फाज में दुई की बूँ होगी। हमारे कोई अल्फाज वहाँ तक नहीं पहुँच पाते जैसे के खुदा का होना हैं। इसलिए जब भी हम खुदा को बताने की कोशिश करते है तो लफ्ज छोटे पड़ जाते हैं।

नुक्ता : रहबर के मानी है दरमियान में खड़ा हुआ इंसान जो तुम्हारे बीच होते हुए भी तुमसे बहुत दूर। वो तुम जैसा भी है और तुम जैसा बिल्किुल नहीं। जो दुनिया की कैद में होते हुए भी पूरी तरह आजाद।

नुक्ता : हर पैदा होनेवाले बच्चे को पैदा होना गोया मौत की तरह ही मालूम होता है क्योंके जिस माँ के पेट में वो नौ माह रहा, जिसे उसने जिंदगी समझा था वो जिंदगी खत्म पर आ गई, और आगे की जिंदगी का बच्चे को कुछ पता नहीं। आगे तो खौफ है के पेट के अंदर का सारा आराम, सारा ऐश सब सुख - चैन छिन रहा है और उसे आगे का तो पता नहीं। उसकी दुनिया से उसे उखाड़ा जा रहा हैं। सब जड़े टूट जायेगी। जिसे हम पैदा होना कहते हैं वो बच्चें के लिए इंतेकाल

हैं और मौत से पहले ही आदमी बेहोश हो जाता है इसलिए बच्चा बेहोश की तरह पैदा होता है।

''नमूदे नख्ल कसरत पायमाल तुख्म वहदत है,
समझते है जिसे मौलूद हम वो ऐन रेहलत हैं।''

कौल : भूल (गलती) घड़ी की पेंडुलम की तरह हैं। अगर एक छोर से बच गया तो दूसरे छोर पर होना ही हैं।

कौल : इंसान जीना भी चाहता है और मरना भी चाहता हैं।

कौल : इंसान में मरने की ख्वाहिश भी छुपी हुई हैं।

कौल : खुबसूरती एक राज हैं।

नुक्ता : एक फूल खिलता है हम कहते है के खूबसूरत हैं। एक चाँद निकलता है हम कहते है खूबसूरत हैं। कोई चेहरा अच्छा लगता है हम कहते है खूबसूरत हैं। कोई गजल दिल को छूती है कहते है खूबसूरत है लेकिन क्या आपने कभी खूबसूरती को देखा हैं? आपने खूबसूरत चीजे देखी हैं मगर जो खूबसूरती है उसको जाना है उसको देखा हैं? अगर नहीं देखा है तो फिर किसी चीज को आप खूबसूरत कैसे कहते हैं? फूल में आपको खूबसूरती नजर आती है मगर खूबसूरती को नहीं देखा। फूल में खूबसूरती सुबह खिलती है और शाम-होते होते खो जाती हैं। एक चेहरे में खूबसूरती दिखती है और कल ये गुम हो जायेगी। जो आज तक था कल खो जायेगा। जो सुबह दिखा था शाम को डूब जायेगा। क्या इसे चीजो से अलग करके देखा? क्या आपने कभी खालिस खूबसूरती देखी हैं? आपने खूबसूरत चीजे देखी है खूबसूरती को नही देखा! फूल की तर्जुमानी हो सकती हैं। इसकी हद हैं उसका आकार है, बनावट हैं, पहचान हैं।

मगर खूबसूरती की तर्जुमानी नहीं हो सकती क्योंके उसकी कोई हद नहीं, बनावट नहीं, पहचान नहीं और फिर भी हम पहचानते हैं। अगर पहचान न होती तो हम फूल को खूबसूरत कैसे कह सकते हैं। अगर फूल ही खूबसूरत हैं तो रात का चाँद खूबसूरत न हो सकेगा। फूल और चाँद में क्या ताल्लुक हैं? अगर चाँद भी खूबसूरत है तो किसी आँख को खूबसूरत न कह सकोगे। खूबसूरती कुछ है जो फूल में भी चाँद में भी, आँख में भी हैं। खूबसूरती कुछ है जो आँख से अलग हैं, चाँद से अलग है, फूल से अलग हैं। आँख जो अभी खूबसूरत मालूम हो रही है, अभी गुस्से से भर जाए तो बदसूरत हो जाएगी, नफरत से भर जाए तो बदसूरत हो जाएगी। आँख वही रहेगी मगर कुछ खो जायेगा तो यकीनन खूबसूरती न तो चाँद है न फूल है न आँख हैं, खूबसूरती कुछ और है लेकिन खूबसूरती को कभी देखा, कभी आमने-सामने देखा, कभी खूबसूरती से मुलाकात हुई। खूबसूरती से कभी मुलाकात नहीं हुई, न देखा न जाना। खूबसूरती की बात कुछ और है फिर भी खूबसूरती को हम पहचानते हैं। जब फूल में वो उतरता हैं राज। जब वह राज फूल में नजर आता है तो हम कहते है के फूल खूबसूरत हैं। वो राज जब किसी आँख में छलकता है तो हम कहते है के आँख खूबसूरत हैं। जब वो राज किसी के कलाम में जाहिर होता है तो हम कहते है के कलाम खूबसूरत हैं। किसी अंजाने रास्ते से हमारी उसकी मुलाकात भी होती है। किसी अंजान रास्ते से वह हमारे दिल में उतर भी जाता हैं किसी अंजान रास्ते से हमारी रुह को भी छू लेता हैं। मगर क्या है वह जिसको हमारा दिल महसूस कर लेता है, हमारी रुह छू लेती है और फिर भी हमारी अकल जिसको पकड़ नहीं पाती, उसका अहाता नहीं कर पाती। दिमाग जिसके पकड़ने में नाकामयाब रहा हैं। जो खुद के हाथ से हमेशा खो जाती

है, क्योंके अकल एक महदूद चीज है और वह महदूद चीज से ही वाकिफ हो सकती हैं। वह महदूद को ही जान सकती हैं, पहचान सकती हैं। अकल किसी चीज की पैमाइश करने के लिए इसकी इब्तिदा देखती है और इंतेहा देखती है के ये शुरु कहाँ से है और इसका खात्मा कहाँ पर हैं। अकल की इसी महदुदियत की वजह से हर चीज टुकड़ो में बट जाती हैं और टुकड़ो में बटती चली जाती हैं । अकल जो पैदा होता है और जो मरता है इसे जान सकती हैं। फूल पैदा होता है और उसको पैदा करने के हजारों रास्ते भी है। मगर खूबसरूती को पैदा करने का एक भी रास्ता नहीं । इसलिए जिसे पैदा नहीं किया जा सकता उसे मारा भी नहीं जा सकता हैं। फूल मर सकता है मगर खूबसूरती नहीं मर सकती । फूल महदूद और खूबसूरती ला महदूद है। इसलिए खूबसूरती के राज को अकल जान नहीं पाती और भटकते रहती हैं।

कौल : अल्लाह की खूबसूरती का नाम मुहम्मद (स.अ.व.) है और मुहम्मद हयातुन्नबी है और हयातुन्नबी खूबसूरती हैं।

आयते कुरानी : अल्लाह खूबसूरत है और खूबसूरती से मोहब्बत करता हैं।

नुक्ता : कोई तो है जो हमेशा से था, हमेशा से है और हमेशा ही रहेगा। सूरज तुलू होता रहेगा और डूबता रहेगा। दुनिया बनते रहेगी और मिटते रहेगी मगर कुछ है, जो सूरज निकलने से पहले भी था और डूब जाने के बाद रहेगा। कुछ है जो दुनिया बनने से पहले भी था और बाद में भी रहेगा। लोग पैदा होते रहेगे और मरते रहेंगे। कुछ ऐसा है जिसे न पैदा किया जा सकता है न मारा जा सकता है जो हमेशा ही रहेगा वो है खालिस वजूद । हमने कभी वजूद नहीं देखा।

हमने एक दरख्त देखा जिसका वजूद है, हमने एक नदी देखी जिसका वजूद है, हमने एक आदमी देखा जिसका वजूद है, हमने एक सूरज देखा जिसका हमने चीजे देखी ''है'' जो है मगर चीजे खो जाएगी। मसलन एक टेबल है, हम कहते है के ''हैं'', एक आदमी है, हम कहते है के ''हैं'', एक मकान हैं हम कहते ''है'' टेबल है, आदमी है, फूल है, मकान है, सूरज है ये ''है'' वजूद क्या है ? जो टेबल में भी है, आदमी में भी है, सूरज में भी है। हमने आदमी देखा, सूरज देखा, मगर जो ''है पन'' है जो ''वजूद'' है वो हमने कभी नहीं देखा। समझे टेबल को हमने तोड़ दिया। हमने दो चीजे कही थी एक टेबल दूसरा ''हैं''। हमने टेबल को तो खत्म कर दिया तो क्या हमने इसकी दूसरी चीज उसके होने को भी खत्म कर दिया। फूल था। अब कहते है नहीं हैं। फूल को हमने मिटा दिया तो फूल के अंदर जो होना था, वजूद था उसे भी हमने मिटा दिया। वजूद को कभी हमने देखा नहीं हमने सिर्फ चीजे देखी हैं। एक आदमी था, मर गया। आदमी है, इसमें दो चीजे थी। आदमी था इसमे हड्डी, गोस्त-पोश्त, अकल, जिस्म, दिल और होना था, वजूद था। हडडी टूट गई, जिस्म गल गया मिट्टी हो गया मगर ''है'' जो होना था क्या वो गल गया, मिट गया लेकिन ''है''। अगर एक फूल को हम मिटाते है तो बस उस फूल को ही मिटाते है उसकी खूबसूरती को नहीं। जिस खूबसूरती को हमने देखा नहीं उसको हम कैसे मिटा सकते हैं। जिसको हम कभी पकड़ न सके जिसको छू न सके उसको खत्म भी कैसे किया जा सकता है। ठीक उसी तरह ''वजूद'' को भी हमने देखा नहीं इसलिए वजूद को भी खत्म नहीं किया जा सकता। इंसान पैदा होते है, मर जाते है। कब्र में दफन हो जाते है मगर जो उनके अंदर होना था

जो वजूद था वो हमेशा है वो हमेशा रहेगा। वही है जो किसी के पैदा होने से पैदा नहीं होता, जो किसी के मरने से नहीं मरता। एक आदमी पैदा होता है, हम इसकी हदबंदी कर सकते है के फलॉ दिन फलॉ तारीख को पैदा हुआ और फलॉ दिन फलॉ तारीख को मरा। इसी ऐतबार से इसकी उमर का ताय्युन करते हैं। ये एक फलॉ आदमी की हद ताय्युन हैं। मगर जिंदगी की नहीं। थोड़ा गहराई में उतरकर देखे के जिससे हमें शायद पता चले के पैदाइश पर भी कुछ इख्तिलाफ है के हम किस दिन को पैदाइश का दिन मनाए। जिस दिन बच्चा पैदा होता है उस दिन या जिस दिन हमल ठहरता है। आम तौर पर जब बच्चा माँ के पेट से बाहर आता है हम उस दिन को पैदाइश का दिन मानते है लेकिन जिस दिन बच्चा माँ के पेट में आता है वो-तो थोड़ा पीछे चले ठीक पैदाइश का दिन तो वही है ज़ब बच्चा माँ के पेट में आता हैं। पैदा तो उसी वक्त हो गया लेकिन थोड़ा और गहराई में उतरे। माँ के पेट में जिस दिन बच्चे की तामीर होती है और इसका पहला खुलिया बनता है तो इसमे का आधा हिस्सा जिंदा था बाप में बहुत पहले ही से और आधा हिस्सा जिंदा था माँ में बहुत पहले ही से तो ये पैदाइश का वाकिया दो जिंदगानी जो पहले ही से मैजूद थे इनके मिलन का ये वाकिया है। मगर ये भी शुरुवात नहीं बल्कि जिंदगी दोनों मौजूद थी एक बाप में पोशीदा था और एक माँ में पोशीदा थी। इन दोनों के मिलने से जिंदगी शुरू हुई। इससे महज एक नाम की शुरुवात हो गई। मगर ये जिंदगी की शुरुवात नहीं। क्योंके जिंदगी बाप में पोशीदा थी, माँ में पोशीदा थी, मौजूद थी, पूरी तरह जिंदा थी। तो ये मिलने से जाहिर हुई मगर मौजूद थी। थोड़ा और पीछे चले जो बाप में छुपा था वह बाप के माँ - बाप में छुपा था

और चलते जाए जो माँ में छुपा था वह माँ के माँ-बाप में छुपा था। ये जिंदगी कब शुरु हुई आप की पैदाइश आपकी पैदाइश हो सकती हैं। लेकिन आपके अंदर जो जिंदगी है उसकी पैदाइश नहीं। अगर इसे हम पीछे लौटाए तो तमाम तवारीख मालूम नामालूम उसमें जम हो सकती हैं। रूहे जमीन पर जो पहला आदमी था हम उसमें जिंदा थे लेकिन वो पहला आदमी भी कैसे हो सकता है। पहले आदमी के होने के लिए भी जरुरी है के जिंदगी उससे पहले मौजूद हो। अब जरा मजहब के ऐतबार से देखे। मजहब कहता है के माँ - बाप के मिलन से जो चीज बनी वो सिर्फ जिस्म की जिंदगी है और रुह इसमें दाखिल हो गई। माँ के पेट में जो वाकिया गुजर रहा है वो भी अजली है और रुह जो वाकिया गुजर रहा है वो भी अजली है । यानी दो अजल का माँ के पेट में मिलाप हो रहा हैं। मैं हमेशा था इस मानी में मेरे जिस्म का जर्रा-जर्रा मौजूद था। मेरी रुहानियत का जर्रा-जर्रा मौजूद था। ऐसा कोई लम्हा नही था जब मैं न था। इस वजूद में शकल कुछ भी रही हो बनावट कुछ भी रहा हो, नाम कुछ भी रहा हो ऐसा कोई लम्हा नहीं था वजूद में जब हम न रहे हो और ऐसा भी कोई लम्हा नही होगा जब हम नहीं होंगे।

कौल : बेटा बाप से पैदा होता है मगर बाप बेटे को पैदा नहीं कर सकता है।

कौल : आदम (अ.स.) से पहले भी जाते आदम (अ.स.) रुहे जमीन पर मौजूद थी।

नुक्ता : समझ अठ्ठरह (१८) साल या कम से कम तेरह साल में पूरी हो जाती हैं। एक अठ्ठरह साल के जवान और एक अस्सी (८०)साल के बूढ़े आदमी की समझ तकरीबन एक ही होती है।

महज जानकारियों (मालूमात) का फर्क होता हैं। अठ्ठारह साल के जवान की जानकारी कम होगी बनिसबत अस्सी साल के बूढ़े के मगर समझ उतनी ही होगी। समझ में किसी किसम का फर्क न होगा। मसलन लड़का एक से हजार तक गिनती जानता था फिर उसे एक हजार से दस हजार तक गिनती सिखाई गई। अब उस लड़के की जानकारी में और इजाफा हुआ। और इजाफा कराया जा सकता हैं मगर अब भी समझ में किसी किसम का फर्क वाकेअ न हुआ। इसी तरह ताउम्र आखिर जानकारियो में इजाफा होता रहेगा। कुछ लोग जानकारियो को ही इल्म समझ बैठते है के जितनी जानकारी है उतना इल्म हैं। हॉला के इल्म और जानकारी में जमीन और आसमान का फर्क हैं। जानकारी हमेशा दूसरो से हासिल होती है और बाहर से आती है और इल्म अंदर से ही हासिल होता हैं, और वक्त पड़ने पर अपना ही इल्म काम आता हैं, न की दूसरो की जानकारी। जानकारी से गुरूर बढता हैं और इल्म से खाकसारी आती हैं। स्कूल और कॉलेजो में उन्ही जानकारी की याददाश्त का इम्तेहान लिया जाता हैं। अगर वह इसमे कामयाब हो जाए तो इन्हें फिर डिग्री से नवाजा जाता हैं। जिन्हें हम फिर पढ़ा-लिखा आदमी मानते हैं। डिग्री आदमी को डॉक्टर बना सकती है, इंजीनियर बना सकती है, प्रोफेसर बना सकती है, साइंसदॉ बना सकती है मगर साहिबे समझ नही बना सकती। समझ के दरवाजे को अंदर का इल्म ही खोल सकता हैं। इल्मे मारफत आदमी की जानकारियों को नही बढाता हैं बल्के आदमी की सोच और समझ को बढ़ा देता हैं। दूसरे अल्फाज में यूँ समझो के समझ को ही बदल देता हैं। समझ के बदलते ही पूरा आदमी बदल जाता हैं।

कौल : जो नाकामयाब होते हैं वो खाली मरते है और जो कामयाब होते है वो और भी ज्यादा खाली मरते हैं।

कौल : इंसान में कुछ ऐसा है जो कभी नहीं भरता।

कौल : हर ख्वाहिश उधार हैं। इसलिए आदमी ख्वाहिश पूरी होने के बावजूद परेशान रहता हैं।

कौल : जहाँ सब ख्वाहिशात पूरी हो जाती है उस जगह का नाम दोजख हैं।

कौल : इंसान जितना चालाक होता जाता है उसके अंदर की मासूमियत उतनी ही खतम होती जाती हैं।

कौल : बीमारियाँ बाहर से आती है और तंदुरुस्ती अंदर से।

कौल : खुशी और गम के बीच में उदासी हैं।

नुक्ता : खामोशी से आँख बंद करके बैठ जाए और एक ही बात का ख्याल रखे के बाहर की कोई चीज नहीं देखेंगे। हमारी आदत की वजह से बाहर की सूरते बहुत आयेगी और ये जानते रहे के ये तस्वीरे बाहर की है और मैं देखने को राजी नहीं। मेरी तैयारी देखने की नहीं हैं। मेरा कोई लुत्फ नहीं हैं, कोई कशिश नहीं हैं। अगर आप इतना कर सके के अंदर का ताल्लुक तोड़ ले बाहर के मजों से तो आप पायेंगे के बाहर के ख्यालात कम हो जाएगे। वो आते ही इस वजह से है के आप बुलाते हैं। मन में कोई भी मेहमान बिन बुलाया हुआ नहीं हैं। मन में कोई भी मेहमान जबरदस्ती नहीं आ गया हैं। आप की दावत हैं। हो सकता है के आपने दावत देके भूल गए हो। हो सकता है के आप दावत देके बदल गए हों। हो सकता है के आपको ख्याल भी न हो के कब किस लाशऊरी के वक्त में आपने

दावत दिया था। लेकिन आप के मनमें जो भी आता है वो आपका ही बुलाया हुआ हैं। आप के मन में जो भी वाकिया गुजरता है जिसके लिए आपके अलावा कोई और जिम्मेदार नहीं हो सकता। अगर ख्वाब में आप किसी का कतल करते है या किसी औरत के साथ जीना करते है तो ये आप करना चाहते होंगे। अपने से भी छुपा लिया होगा। खुद को भी धोखा दे लिया होगा। सुबह उठकर आप कहते है के सिर्फ ख्वाब था, ख्वाब का क्या? लेकिन ख्वाब आपके है, ख्वाब तैयार किए हुए है। आपने ही सजाए है इसलिए ख्वाब का क्या? ऐसा भी मत कहना। ख्वाब आपका आईना, आपकी झलक है, आपकी खबर है, आपके मन के सतहो की खबर है, ये मन है आपके पास दिन में झूठ मान लो मगर रात में ये मन काम करने लगता है। माहिरे नफसियात कहते है के इंसान को ख्वाब न आए तो इंसान पागल हो जाए। वो ठीक ही कहते है। दिन भर आप जो भी दबा लेते है, छुपा लेते है ख्वाब में वो जाहिर हो जाता है। पहले लोग सोचते थे के अगर एक आदमी को ज्यादा दिन तक सोने न दिया जाए तो वो पागल हो जायेगा लेकिन अब माहिरे नफ्सियात ये कहते है के असल वजह ये नहीं के नींद नहीं मिली बल्कि नींद न आए तो वह ख्वाब नहीं देख पाता जिसकी वजह से वो पागल हो जाता हैं। रात में आदमी बारह (१२) बार ख्वाब देखता हैं। बारह बार ख्वाब में दाखिल होते हैं। दरमियान के वक्त में आप ख्वाब से बाहर होते है या नींद में होते हैं। आप बाहर से भी देखकर बता सकते हैं के आदमी कब सो रहा है और कब ख्वाब देख रहा हैं। इसकी आँख की पुतली की रफ्तार बता देती है। फिल्म को देखते वक्त जिस तरह आँख की रफ्तार होती है ठीक ख्वाब को देखते वक्त भी वही

रफ्तार होती हैं क्योंके ख्वाब भी एक फिल्म हैं। उसके आँख की पुतली रुक गई यानी वो सो रहा है। अगर चल रही है तो गोया महूवे ख्वाब हैं। साइंसदानों ने एक तर्जुबा किया के कई आदमियों को ऐन ख्वाबीदा हालत में जगाया गया तकरीबन पंद्रह दिनों के अंदर कई की हालत पागलो जैसी हो गई। दूसरा तर्जुबा यूँ किया गया के ऐन हालते नींद में जगाया गया। मगर कोई आदमी पागल न हुआ बल्कि कुल्ली तौर पर सब दुरुस्त थे। इन तर्जुबात की रोशनी में साईसदॉ कहते है के नींद की वजह से आदमी पागल नहीं होता बल्कि उसकी असल वजह ख्वाब का न देखना हैं। इंसान दिनभर में जो कुछ कचरा इकठ्ठा करता है अपने हालते लाशउरी में अगर वो न निकल पाए और कचरा इकठ्ठा होता चला जाए तो वो ही पागलपन की वजह बन जाता हैं। ख्वाब बिला वजह नहीं बल्कि आप ही के हैं। अपने ख्वाब हैं। अगर आप आँख बंद करते हैं और तस्वीरे आना शुरु हो जाती हैं इनमें आपको मजा मिलता हैं। इसलिए आते हैं इसलिए मैं कहता हूँ के पहला काम इस मजे को तोड़ दे। तस्वीरे आए तो देखे मगर बेमजा हो जाए। गैर मुतहरिक हो जाए। मसलन एक आदमी फिल्म देख रहा हो और काफी मजा भी ले रहा हो। उतने में कोई डॉक्टर आए और कहे के तुम्हारी जाँच से पता चला के तुमको कैंसर है और तुम कुछ ही दिनो के मेहमान हो। अभी भी वो आदमी फिल्म देख रहा होगा मगर जो देखने का मजा था वो खतम हो जायेगा। इसी तरह जब आप तस्वीरे से बेमजा हो जायेगे तो तस्वीरे आना कम हो जायेगी। तस्वीरे पुरानी आदत की वजह से आयेगी जरुर मगर जड़े खोखली होगी। रफ्ता-रफ्ता दरमियान में एक खालीपन, एक वक्फा होगा । जब ऐसा वक्त आयेगा तब आपकी

नजर खुद पर होगी तब आप देखेंगे के आपका चिराग आपको रोशन कर रहा है। आपके वजूद की लौ आपको जाहिर कर रही है ये वही चिराग और वही लौ है जो अब तक दूसरों को जाहिर कर रहा था जब दूसरा कोई मौजूद नही होता तब चिराग की रोशनी खुद पर पड़ना शुरु हो जाती हैं। ठीक उसी तरह कान बंद करके बैठ जाए। बाहर की आवाजे आयेगी मगर आप बेलुत्फ बदमजा हो जाए। कुछ ही दिनों मे सारी आवाजे खामोश हो जाएगी। उस दिन अंदर का सन्नाटा सुनाई देगा। हर हवास को अंदर की तरफ मोड़ा जा सकता हैं। खुश्बू अंदर की भी एक खुश्बू है उसका हमे कोई पता नहीं। शायद वही असल खुश्बू हैं। लेकिन बाहर की खुश्बुओ ने हमारे नाक के नथनो को इस कदर भर दिए के हमे याद भी नही रह जाता के रूह की भी कोई खुश्बू है। कोई साँस अंदर की भी हैं। हमारे हवास हमारे रास्ते है मगर दोहरे, हवास आपसे भी जुड़े है और बाहर से भी। इसीलिए बाहर की खबर तुम तक लाते हैं। मगर हम लोग हवास का इस्तेमाल एक तरफा रास्ते की तरह कर रहे है। हम इससे महज दुनिया की ही खबर ले रहे है। हमने उससे कभी भी अंदर की खबर न ली। जो अपने हवास को बातिन की ओर मोड़ लेता है वह राजे हस्ती से वाकिफ हो जाता हैं।

"मन अरफा नफसहू फकद अरफा नफसहू"

कौल : हर कोई हमे वैसा ही दिखाई देता है जैसी हमारी सोच हैं।

नुक्ता : किसी आदमी के ताल्लुक से हम अगर ये अकीदा रखते है के वो आदमी अच्छा है तो गोया हमारा अकीदा हमारा इंतेखाब बन जाता हैं के हम उस आदमी की अच्छाई चुन लेते हैं और बुराई छोड़ देते हैं। उसी तरह किसी को बुरा मान लिया तो भी उसकी अच्छाई

हमारी नजरों से छुप जाती हैं।

इशारा : इंसान अंदर से खुद को बंद कर रखा है और अपने आपको बाहर से खोलना चाहता हैं। इसलिए खोल नहीं पाता ।

नुक्ता : हर शै की तीन किस्में होती है।

१) ठोस २) माय ३) गैस

मसलन बर्फ पानी की ठोस शकल है और पानी मॉय की शकल है और भाप पानी की गैसी शकल है। महज चीज ही नहीं हमारे अल्फाज भी तीन शकल रखते हैं। किसी ने हमको गाली या बुरा भला कहा तो गोया ये अल्फाज की ठोस शकल है जिससे इंसान को चोट पहुँचती है। दूसरी शेर, नजम, गजल, कलाम वगैरह ये अल्फाज की मॉय शकल है। शेर-शायरी वगैरह में एक तरह का बहाव होता है जो किसी पानी में पाया जाता हैं। कलाम में एक लफ्ज के कई माने निकलते है। हर कोई कलाम को अपने ख्याल अपनी सोच व मिजाज के मुवाफिक समझता है। अगर इस तरह न हो तो ये फिर कलाम नहीं हो सकता । तीसरी खामोशी पुर खामोशी ये लफ्जे की गैस की शकल हैं। जहाँ बगैर कहे भी बात पूरी हो जाती है।

इशारा : आदमी जवाब पाने के बाद भी सवाल में उलझा हुआ रहता हैं आखिर क्यों ? अगर उसकी गहराई में जाकर देखे तो पता चलेगा के जवाब सवाल का मिलता है और ये जवाब पूँछने वाले तक नहीं पहुँच पाता। जबके जवाब साहिबे सवाल को मिलना था न के सवाल को । अगर जवाब महज सवाल का ही होता जिस तरह इल्मे हिसाब में हर सवाल का जवाब बँधा होता हैं, जैसे दो और दो कितने होते

है ? जवाब होगा चार । इसी तरह अदद बदलते जाएगे या हिसाब की निशानी बदलती जाएगी मगर जवाब वही बँधा होगा। अगर ये कायदा ठीक है तो हर सवाल का जवाब बँधा होना चाहिए मगर हुजुर अकरम स.अ.व. एक ही सवाल का कई जवाब देते हैं। एक साहिल वो ही सवाल करता है तो जवाब कुछ और होता हैं। दूसरा साहिल वही सवाल करता है तो जवाब कुछ और पाता है। हुजूर अकरम स.अ.व. कभी सवाल को देखकर जवाब नहीं देते थे बल्कि सवाल कौन पूछ रहा है उसको देखकर उसके ऐतबार से जवाब देते थे। जैसे कोई हकीम मरीज की नफ्ज को देखकर उसकी दवा तजवीज करता है न के मर्ज को सुनकर दवा देता हो। जैसे के आजकल हो रहा है जिसकी वजह से असर कम बल्कि रद्दे असर ज्यादा हो रहा है। जिसकी बदौलत मर्ज ठीक होने के बजाय और बढ़ जाता हैं। जब हकीम ही नीम हो तो फिर जान का खतरा बना ही रहेगा। बहेरे कैफ जो नासमझ है वो एक जैसे सवाल का एक जैसा ही जवाब देगे। बल्कि वो उसी जवाब को दोहराते रहते हैं। क्योंके जवाब उनका नही रहता बल्कि किसी और से या किसी किताब से सिखा हुआ होता हैं। इसीलिए तोते की तरह दोहराना पड़ता हैं। इस तरह का दिया हुआ उधार जवाब महज सवाल की खानापूरी कर सकता हैं। मगर साहिल को मुतमइन नही कर सकता क्योंके जवाब देनेवाला खुद मुतमइन नहीं होता। जो साहिबे समझ है जो जानते है के सवाल एक जैसा हो सकता है मगर पूछनेवाला अलग उसकी तजज्जुस अलग होगी, उसकी रुह अलग होगी। अगर साहिल के अंदर झाँक के देखा जाए के सवाल कहाँ से उठा तो पता चलेगा के सवाल तो वही है, एक जैसा ही है मगर साहिल के हालत के ऐतबार से सवाल

का पूरा मतलब ही बदल जाएगा। इसलिए जवाब सवाल को नहीं बल्कि पूँछनेवाले को मिलना चाहिए। क्योंकि सवाल अहम नही बल्कि पूँछनेवाला अहम है।

कौल : नासमझ को सवाल सुनाई पड़ता है और साहिबे समझ को पूँछनेवाला।

कौल : उधार जवाब कचरे के अलावा कुछ भी नहीं।

इशारा : हर आदमी सुख पाना चाहता है और दुख को मिटाना चाहता है। पूरी जिंदगी उसकी इसी जद्दो जहद में निकल जाती हैं। दुख मिटने के बजाय दिन ब दिन और बढता ही चला जाता है क्योंकि आदमी सुख को दोस्त और दुख को दुश्मन जैसे समझता है मगर कभी वो इस बात को समझने की कोशिश नही करता के दुःख मेरी जिंदगी में क्यों आ रहा है। जैसे साईसदॉं बार-बार होनेवाले अमल को नहीं देखते बल्कि ये अमल किस साइंसी कानून के तहत हो रहा है उस कानून को समझने की कोशिश करते है और उस साइंसी कानून से खुद भी फायदा उठाते है और दूसरे भी फायदा उठाते हैं। जैसे न्यूटन पर सोते वक्त आम गिरा तो वो उठकर सवाल करता है के हर चीज नीचे के ही तरफ क्यों गिरती है। उसने गहरी तहकीक करके इस अमल का साईंसी कानून कुवते जाजिबा (Gravity) बनाया जो दुनियाभर में मशहूर हुआ। अगर न्यूटन तहकीक के बजाय दरखतो को ही काटने लगता तो क्या होता। मगर इंसान अपने दुख के दरख्त को काटने लगता है लेकिन जरा भी तहकीक करने तैयार नहीं के आखिर ये दुख की वजह क्या हैं, ये दुख किस कानूने फितरत के तहत मुझ पर गिर रहे है। दुख दुश्मन नहीं बल्के आपका मुखबिर है

यानी खबर देनेवाला। मसलन आपके पैर में अगर कुछ चुभ जाए तो आपको दर्द महसूस होगा। अगर कोई उसका ये मतलब निकाले के दर्द मेरा दुश्मन है तो जरा सोचिए फिर पैर का आलम क्या होगा। क्या फिर पैर में जहर नहीं चढ जायेगा। बिल आखिर आपको अपने पैर से हाथ धोना पड़ेगा। दर्द आपके जिसम की खबर देता है के कुछ गलत हो रहा है। दर्द आपकी तवज्जे को उस हिस्से की तरफ मुतवज्जा कराता हैं। फिर भी अगर आप तवज्जा न करे तो दर्द और बढ़ जाता है यानी दर्द की शिददत तवज्जें को शिददत से तवज्जो करने की दावत देती है। मगर हम इसके बिल मुकाबिल तवज्जे के बजाय दर्द को ही मिटाने में लग जाते है लेकिन दर्द की वजह जानने की कोशिश नही करते के दर्द क्यों हो रहा हैं। अगर वजह को मिटा दिया जाए तो दर्द खुद - ब खुद मिट जाता है। ठीक उसी तरह से दुख भी तवज्जे दिलाना चाहता है के कही किसी वजह से तुम कानूने कुदरत के खिलाफ चल रहे हो। फिर हमे कानूने कुदरत के तहत आ जाना है। जैसे ही हम कानूने कुदरत के तहत आ जाते है तो दुख को मिटाना नहीं पड़ता बल्कि दुख खुद - ब - खुद मिट जाता हैं। आज साइंसदानो की तरक्की का राज यही है के वो कुदरत के खिलाफ या कुदरत को काबू करने के बजाय उसका एहतराम करते हुए ऐसे जाब्ते बनाते है जिससे वो खुद भी और उस पर अमल करनेवाले भी खुशहाल रहे।

नुक्ता : कई बार कुछ बाते जिन्हें हम नहीं समझते काम करती है क्योंके हम उन्हें नहीं समझ पाते इसलिए वो काम कर जाती है ।

कौल : मौत खात्मा नहीं बल्कि पूरी जिंदगी का मरकजे कामिल है ।

कौल : मौत जिंदगी की अहम हालत है ।

कौल : मौत का दीदार उसी वक्त होता है जब किसी अपने की मौत होती है।

कौल : साहबे समझ दूसरे की भूल से भी सीख लेता है और नासमझ खुद की भूल से भी कुछ नहीं सीखता ।

कौल : मौत वो बुलंदी है जहाँ से जिंदगी को बेहतर ढंग से देखा जा सकता है।

कौल : इल्म की दीवार के आगे चीन की दीवार छोटी है।

कौल : कुछ और बनने की चाह इंसान को पागल बना देती है।

कौल : जन्नती वह है जिसके अंदर जन्नत हो। न के वह जो जन्नत में रहने का ख्वाब देखता हो।

नुक्ता : तसव्वुर क्या है? पीर की मौजूदगी को महसूस करना हैं। पीर का नाम और जाहरी जिस्म को पूरी तरह से भूल जाना हैं और जो जाते पीर है इस में अपनी जात को इस तरह डुबोना है जिस तरह कतरा दरिया में गुम हो जाता है। इसी का नाम फनाफिल शेख हैं और जिस दिन जाते पीर में जाते रसूल की मौजूदगी का अहसास होगा, उसी दिन फना फिल रसूल का मुकाम हासिल होगा और जिस दिन जाते पीर में खुदा का अहसास होगा उसी दिन फनाफिल अल्लाह का अहसास होगा और जिस दिन जाते खुदा और खुदी गायब हो जायेगी उसी वक्त बका बिल्लाह का दीदार नसीब होगा।

कौल : इंसान पाना सब चाहता है और खोना कुछ नहीं।

कौल : इस दुनिया में उस्ताद बनकर सीखने से बेहतर कोई तरीका नहीं।

इल्मे जिन्सियात

तीन तरह की जिन्सियात यानी शेहवत पाई जाती हैं।

१) हेट्रो सेक्सुअल (Hetero Sexual) :-

यानी अपने मुखालिफ जिन्स से शेहवत। जो आम है यानी मर्द और औरत के दरमियान।

२) होमो सेक्सुअल : (Homo Sexual) :-

हमजिन्स से शेहवत करना यानी मर्द और मर्द के दरमियान, औरत और औरत के दरमियान।

३) ऑटो सेक्सुअल : (Auto Sexual) :

जो खुद से हो। जैसे अमीबा कीड़ा होता हैं। वह खुद ही मर्द और खुद ही औरत यानी दोनों खुद ही होता है। इसकी पैदाइंश किसी जिन्स से मिले बगैर होती है। अमीबा इतना खाता है के आखिर इसके मरकज से वह दो हिस्सो में बँट जाता हैं। अकसर बच्चे खुद का अँगूठा चूसते रहते हैं। मगर किसी बड़े आदमी या औरत को अपने ही अंगूठे को चूसने कहा जाए तो बेमजा होगा। हाँ दूसरे को छूने और चूमने में मजा आ सकता हैं। हर आदमी साठ (६०) फीसद मर्द होता है और चालीस (४०) फीसद औरत और हर औरत साठ (६०) फीसद औरत होती है और चालीस (४०) फीसद मर्द जहाँ बराबरी का मुकाम आ जाता है तो फिर समझे क्या होता ? बकौल मिर्जा गालिब के -

न तू ही मिला न विसाले सनम

न यहाँ के रहे न वहाँ के हम

शेख मुहिय्युद्दीन इब्ने अरबी र.अ. फरमाते है जो दोनो कुव्वतो में कमजोर होता है वह मुखन्नस बनता हैं। इंसानी पैदाइश के लिए शर्त है मर्द और औरत का मिलन। जो भी आदमी पैदा होता है वह मर्द और औरत के मिलन से ही पैदा होता हैं। इसका मतलब मर्द और औरत के अज्जा के मिलाप से ही इंसान की तख्लीक होती हैं। मगर ये नुक्ता याद रखे के जब ये बात समझ में आ गई के हर मर्द में चालीस (४०) फीसद औरत है और हर औरत में चालीस (४०) फीसद मर्द है तो इसके माने ये हुए के हर मर्द में औरत पौशीदा है और हर औरत में मर्द पोशीदा हैं। फिर इसके एक और लतीफ माने ये हुए जब एक मर्द एक औरत से मिलता है जिसको हेट्रो सेक्सुअल (Hetero Sexual) कहते है तो दोनो के मिलन से वह एक तरह की अंदरुनी खुशी महसूस करते है और शायद वह ये समझते होंगे के ये खुशी दोनों के मिलने से हुई है मगर दोनों के मिलते ही एक दायरा पूरा होता है और वह दायरा जिस्मानी तौर पर होता हैं। इससे कोई और दुनिया में आ सकता है मगर मिलन अंदरुनी खुशी की वजह नहीं बन सकता। ये जिस्मानी तौर पर कुछ आराम महसूस करा सकता हैं। इसकी असल वजह ये है के जब दोनो मिलते है तो एक लम्हा वह आता है जहाँ मर्द के अंदर की औरत और औरत के अंदर का मर्द दोनों एक हो जाते है और एक बातनी दायरा पूरा हो जाता हैं जिसको तसव्वुफ की जुबान में हम कुछ यूँ कह सकते हैं के इंसान मुकम्मल हो जाता हैं। जहाँ दुई का खात्मा मुख्तसर वक्त के लिए हो जाता है जिसकी वजा से रुहानी इतमिनान हासिल होता है मगर इस रुहानी अहसास को मुस्तकिल बनाने के लिए मुराकबे में पूरी तरह उतरना होगा। जो अहसास इसको किसी दूसरी औरत से जाहरी तौर पर हुआ और किसी औरत को किसी

मर्द से जाहरी तौर पर हुवा होगा। मगर जब मर्द अपने अंदर की औरत से मिलता है जिसको ऑटो सेक्सुअल (Auto Sexual) कहते है तो वह खुद पैदा होता है। जहाँ न कोई मर्द बनता है न कोई औरत - बस एक नूर बन जाता हैं। ऐसे शख्स को न मर्द न औरत बल्कि सरापा नूरे मुजस्सिम ही कहा जा सकता हैं।

कौल : मेदा शेहवत का दरवाजा है ।

इल्मे जिन्सियात : शेहवत के तीन तल होते हैं। **पहला तल** जिस्मानी होता हैं। जहाँ एक जिस्म दूसरे जिस्म से मिलता हैं। इस तरह की शेहवत में इंसान और जानवर दोनों बराबर हैं। ये मिलन अंधूरा होता है इसलिए इस अमल को बारबार दोहराना पड़ता हैं। जवान-आदमी की कुव्वते शेहवत तेजी से बनती है। इसलिए जवान आदमी मे कुव्वते शेहवत का माद्दा ज्यादा होता हैं और जैसे जैसे उमर में इजाफा होता जाता है मेदा कमजोर होता जाता हैं। जिसकी वजह से कुव्वते शेहवत कम होती जाती है। इसलिए उमरदराज आदमी कम शेहवत करता हैं। शेहवत की कमी की वजह से उमरदराज में हवस बढ़ जाती हैं। एक नवजवान कुव्वते शेहवत के मामले में पूरी तरह तंदरुस्त होता है और उमरदराज कुव्वते शेहवत के मामले में कमजोर होता हैं। इसी कमजोरी की वजह से हवस में इजाफा हो जाता हैं। जो आदमी आधा पेट खाना खाता है इसका ख्याल खाने के बाद भी खाने में ही होगा। जिस्मानी तौर पर भी शेहवत करने के लिए दरिन्द, परिन्द और दीगर हैवानात बहरी व बर्री का एक वक्त तय होता हैं, मगर कुर्बान जाए हजरते इंसान पर जिसका कोई वक्त ही नहीं होता। न खाने का न शेहवत का। इसके लिए इंसान हमेशा तैयार रहता हैं। लुक्माने हकीम से किसी ने सवाल किया के बीवी से

शेहवत कब करनी चाहिए? हजरत लुक्मान हकीम जवाब देते है के जिंदगी में सिर्फ एक बार साहिल फिर पूँछता है के अगर बर्दाश्त न हो तो । लुक्मान हकीम जबाब देते हैं के साल में एक मर्तबा। फिर साहिल सवाल करता हैं के फिर भी बर्दाश्त न हो तो। जवाब मिलता है के महीने में एक मर्तबा। फिर सवाल करता है के बर्दाश्त न हो तो जवाब मिलता है के हफ्ते में एक मर्तबा फिर वही सवाल करने पर जवाब मिलता है के अपनी कबर खुद खोद लेना। मकड़ी की एक किसम ऐसी भी है के एक बार के शेहवत के बाद नर मर जाता हैं। ऐसे कई मखलूक है जो एक मर्तबा, दो मर्तबा, तीन मर्तबा इसी तरह हस्बे हैसियत मर जाते है क्योंकि जिस्म से निकलनेवाली तवानाई के झटके वो बर्दाश्त नहीं कर सकते और मर जाते हैं। यही उनके लिए कुदरत का निजाम है मगर इंसान, हमेशा कुदरत के खिलाफ ही चलता हैं। दिल के दौरें (Heart Attack) की एक वजह कसरते शेहवत भी मानी गई है। ज्यादा शेहवत करने से कुव्वते मुदाफात यानी बीमारियों को दफा करनेवाली कूवत कमजोर हो जाती हैं। जिसके वजह से बीमारियाँ जिस्म में घर कर लेती हैं। बुर्जुगों का कौल है के ''रतन का जतन कर'' इसी रतन के बदौलत चेहरे में रौनक होती है, आँखो में चमक रहती हैं। ज्यादा शेहवत से आँखो की बिनाई में फर्क आ जाता है गोया आँख भी जिसम का रतन हैं। अगर इस रतन को सलामत रखना है तो उस रतन का जतन करना होगा। चेहरे की कशिश का राज यही हैं। जिस्मानी तल की शेहवत ऊपरी सतह की होती हैं। इंसान अपनी कूवत को निकालने के बाद शायद जिस्म हल्का और आराम महसूस कर सकता हैं और अच्छी तरह सो सकता है जिस तरह कोई नींद की गोली लेकर सोता है।

बच्चो में एक उमर के बाद कुव्वते शेहवत बेदार होती है इसलिए निजामे कुदरत के तहत नीचे की ओर एक दरवाजा खोल दिया जाता है ताके वो कूवते बह सके। जिस तरह लड़किया में माहवारी (M.C.) इस बात का सिग्नल देतीं है के कूवत पूरी तरह से बेदार हो चुकी हैं। ठीक इसी तरह से लड़को में एहतलाम गोया एक सिग्नल होता हैं। मगर ये लड़कियो से बिल्कुल मुख्तलिफ होता हैं। लड़का फिर जवान फिर जईफी की उमर को पहुँचता हैं। मगर कुव्वते शेहवत का जो बहाव नीचे की ओर था जो एक निजाम कुदरत की हिकमत अमली थी इसको बदलने की कोशिश नही करता। पानी को ऊपर से नीचे की तरफ आना आसान है मगर ये हिकमत खास वक्त और खास मकसद बकाये नस्ल के लिए हैं। इंसान कसरते शेहवत के वजह से अपनी तौकीर शेहवत का सुरुर और अपनी मर्दानगी से हाथ धो बैठता हैं।

दूसरा तल : दूसरा तल कल्बी हैं। बवक्ते शेहवत यहाँ जिस्म के साथ साथ दिल भी शामिल रहता हैं। इस तरह से होने वाला अमल इंसान को थोड़ी गहराई तक ले जा सकता हैं। इससे जिस्म को आराम और कल्ब को राहत व फरहत दिलाता हैं। साथ ही साथ एक और अमल जहूर में आता हैं। एक खास तरह की कीमिया वक्ते अंजाल निकलती है जो बच्चे में एक तरह का खास वस्फ पैदा करती हैं। बच्चा जहन फहीम होता हैं। वो बच्चा जिस मैदान में होगा वो कामयाब व कामरान होगा। वो बच्चा जिस्मानी तौर पर भी तंदरुस्त होगा। कम बीमार होगा और उमर दराज को पहुँचेगा। और जहनी तौर पर भी इस कदर तंदरुस्त होगा के तनाव की हालत में भी इसका जहन कम दबाव महसूस करेगा। इसकी याददाश्त आखिरी

वक्त तक इसका साथ देगा। अकसर वालदेन को शिकायत होती है के इनका बच्चा दीगर बच्चों से कम अकल और नासमझ हैं। अच्छे-से अच्छे पढ़ानेवाले और अच्छी स्कूल के बावजूद इनका बच्चा सीफर हैं। बच्चे की इस हालत के नब्बे (९०) फीसद जिम्मेदार इनके वालदेन होते हैं। अगर वालदेन अपने ही बच्चों का तज्जिया करके देखे तो पता चलेगा के कोई बच्चा अपने दूसरे भाई से ज्यादा समझदार है और कोई कम। कोई डॉक्टर है तो कोई मजदूर। वजह साफ है जहाँ जिस्म और दिल मिला वहाँ डॉक्टर इंजीनियर जहाँ महज जिस्म मिला वहाँ मजदूर। जिस्म और दिल का मिलना आसान नहीं ये अमल एक खास वक्त और कुदरते कामिला के तहत ही होता हैं।

तीसरा तल : तीसरा तल रुहानियत का हैं। शायद लोग सुनकर हैरान होंगे रुहानियत और शेहवत का क्या ताल्लुक क्योंके जब भी हमने रुहानियत के खिलाफ जिस लफ्ज का इस्तेमाल किया वो है नफ्सानियत, शेहवत का। ये याद रखो किसी के मानने या न मानने से हकीकत नही बदलती। जहाँ लोगो का जिस्मानियत से गहरा कल्बी तक पहुँचना मुश्किल हो वहाँ रुहानियत की बात शायद बेमानी लगती हैं। पहले रुहानी शेहवत को समझो। यहाँ महज एक जिस्म से दूसरा जिस्म या महज दिल से दिल मिलने की बात नहीं बल्कि एक रुह का दूसरे रुह में समा जाना हैं। पहला तल जिस्म का है जो रोजाना मिलता है, दूसरा तल दिल का है जो कभी कभी मिलता है, तीसरा तल रुहानियत का है, ये महज एक बार ही मिलता है फिर दोबारा की जरुरत ही नहीं होती। इस तरह का वाकिया बरसों में नहीं बल्कि सदियों में गुजरता है। इस तरह के मिलन से एक रुहानी इंकलाब बरपा होता है। जमाना करवट लेता है, एक नए दौर

की शुरुवात होती है। इस तरह के रुहानी मिलन से आनेवाला बच्चा कोई मामूली नही होता है बल्किे अपने वक्त का ताजदार होता है। जाहिरी उलूम के साथ साथ रुहानी उलूम का भी इमाम होता है, वो रहबरे वक्त होता हैं। हजारों चिराग उससे रोशन होते है, वो अपने साथ एक ऐसी खुश्बू लाता है जिसको लोग हर दौर मे हर सदी मे महसूस करते हैं। वो सारे आलम को अपनी खुश्बु से महका देता हैं वो अपने अंदर एक ऐसी चमक लाता है जिसके आगे हजारो सूरज गुम हो जाते हैं। कायनात का जर्रा-जर्रा इसकी चमक से जगमगा उठता है। और यही जगमागहट इसके आने की खबर बन जाती है। फिर जरा सोचिए इस तरह का मिलन क्या एक मर्द और एक औरत का हो सकता हैं। नही बल्किे एक रुह का दूसरे रुह से मिलन है, एक सदी का दूसरी सदी से मिलन है, एक नूर का दूसरे नूर से मिलन है, एक वजूदे हकीकी का दूसरे वजूदे हकीकी से मिलन है। क्या अब भी आप ये कह सकते है के इस तरह का मिलन बारबार हो सकता हैं। क्या हर घड़ी हो सकता है, जी नहीं। ये सदियो में होनेवाला अमल है क्योंके एक सदी से दूसरी सदी का मिलन हैं।

नुक्तहे अकीदत: अकीदत और अंधी तकलीद के फर्क को जानने के लिए इसके नतीजे को देखना होगा। इससे ही फैसला होगा के अकीदत अकीदत है या अंधी तकलीद। मसलन आप किसी आदमी से अकीदत रखते है और हो सकता है के वो आदमी गलत हो और वो अकीदत के काबिल ही न हो। अगर ऐसे आदमी से आपकी अकीदत का ताल्लुक है तो लोग कहेगे के ये अंधी तकलीद है। आप अंधे है, आपको दिखाई नहीं देता के वह आदमी गलत हैं। अगर आप ऐसे किसी कवानीन पर अकीदत रखते है जिसकी कोई साइंसी

दलील न हो तो लोग कहेगे के ये अंधी तकलीद है। कोई कवानीन साइंसी है या नहीं ये अहम नही। अगर इस कवानीन पर अकीदत की वजह से आप की जिंदगी साइंसी होती हो अगर इस अकीदत की वजह से आप में तबदीली आती है, अगर वह अकीदत आप को पाक और बातनी कूवत की तरफ ले जाती है तो समझना के वही अकीदत है और वह कवानीन कितना ही साइंसी तौर पर हो जिस पर अकीदत रखने से जिंदगी मुडती हो नीचे की तरफ आती है तो समझना के वह अंधी तकलीद के अलावा कुछ नही हैं। कोई कैसा है ठीक है या गलत ये दीगर बात हैं। अहम बात ये है के अकीदत कैसी है। ये अकीदत करनेवाले पर मुनहसिर है। अकीदत कोई चीज की तरह नहीं है बल्कि चीज के ताल्लुक से हैं। किस से आप की अकीदत है ये अहम या फैसला कुन नहीं हैं। आपकी अकीदत आपके लिए क्या करती है यही अहम है यही फैसलाकुन बात हैं। तब हर आदमी तौल सकता है के इसकी अकीदत है अकीदत या अंधी तकलीद। अगर आपकी अकीदत आपकी कही नही ले जाती आप वही के वही सड़ते है तो वो अंधी तकलीद है। अकीदत तो एक आग है जो आप को जला देगी और बदल देगी। आग में हम सोने को डाले तो जो कचरा है वो जल जाता है। सोना बच जाता हैं। आग सच्ची है या झूठी क्या सोना पूँछ सकता है वो खुद में देखे के जो कचरा था वो जल गया और वो निखर कर बाहर आ गया तो वो आग सच्ची थी। आग को जानने का सोने के पास और कोई जरिया भी तो नहीं अगर कचरा सब बच जाए तो आग झूठी हैं। आप इसकी फिकर मत करना के आपको किससे अकीदत है, आप इसकी फिकर करना के आप के पास जो अकीदत है वो आग है के नहीं। वह आपको

बदलती है के नहीं। ये बडी मजे की बात है के आप जिससे अकीदत रखते है वह कभी-कभी अकीदत के काबिल भी नहीं होता। मगर आप काबिल हो जाते है अपनी अकीदत की वजह से। ऐसा रोज होता है के आपको जिससे अकीदत है वो पूरी तरह से उस अकीदत के काबिल होता है मगर आपकी जिंदगी में कोई फर्क नहीं आता, कोई वाकिया नहीं होता। आप नाकाबिल ही रह जाते है मगर हम सभी ये सोचते है के हमारी जिससे अकीदत है वो ठीक है या नहीं। मगर दूसरे सिरे से दूसरी तरफ से देखे के साहिबे अकीदत ठीक है या नहीं। अगर आपकी अकीदत आपको डराती हो तो ये अंधी तकलीद हैं। आपकी अकीदत आपको लाखौफ करती है तो ये अकीदत हैं। आपकी अकीदत नफरत, हसद, बुग्ज, लालच से भरती हो तो अंधी तकलीद हैं। आपकी अकीदत करम, रहम बन जाती है तो वो अकीदत हैं। अपने से तोलने के अलावा कोई जरिया नहीं है जो दूसरे से तोलने चलेगा इसे कोई काबिल मिलनेवाला नहीं हैं। जिससे वो अकीदत कर सके जो खुद पर सोचना शुरु करेगा उसे हर तरफ काबिल ही काबिल मिल जायेगे जिससे वह अकीदत कर सके।

हिकायत : एक बुजुर्ग थे उनकी ये सिफत थी के वो हर किसी पर भरोसा करते थे और हर आदमी आपका कोई न कोई सामान ले जाता था। बुर्जुग के मुरीद ने कहा हजरत आप सब पर जल्दी भरोसा कर लेते है और तकलीफ उठाते है। कम से कम पहले तहकीक तो कर लेना चाहिए के वो भरोसे के लायक भी है या नहीं। कितने आदमी आपको धोखा दे गये फिर भी आपका आदमियों से भरोसा नहीं छुटता वो बुर्जुग मुस्कुराकर कहने लगे के वो सभी मेरे भरोसे का इम्तिहान ले रहे है। वो बुर्जुग उस मुरीद से बोले के तुझे वो लोग

ज्यादा नुकसान पहुँचा रहे है सामान तो गया साथ में तेरी अकीदत भी जा रही हैं। सामान की कोई कीमत भी हो सकती है उसे दोबारा बाजार से खरीदा भी जा सकता है मगर अकीदत की कोई कीमत नही और न उसे किसी बाजार से खरीदा जा सकता है। मेरे साथ ऐसे लोग हो जो मुझे किसी किस्म का नुकसान न पहुँचाते हो तो फिर मेरे भरोसे के लिए कोई कसोटी भी न होगी। मैं आदमी पर भरोसा करते ही जाऊँगा। सवाल आदमी का नहीं बल्कि मेरे भरोसे का हैं। सवाल ये नहीं के आदमी पर मेरा भरोसा हो बल्कि सवाल ये है के मेरा भरोसा हो। अगर मैं आदमी पर भरोसा नहीं कर सकता तो मैं किसी पर भी भरोसा नहीं कर सकता। अगर हम उस बुर्जुग के नजरिए से देखे तो अकीदत में जमीन व आसमान का फर्क आ जायेगा। अकीदत अहम है किस पर हैं ये अहम नहीं - अंधी तकलीद नामर्द अकीदत हैं। इससे कुछ पैदा नहीं होता उसे हम दिमाग के किसी कोने में रखे रहते है। वो किसी काम की नहीं। इसका कोई इस्तेमाल नहीं। अगर इतने लोग खुदा पर भरोसा रखते है तो ये भरोसा झूँठा होना चाहिए क्योंके अगर सच में इतने लोग खुदा पर भरोसा रखते है तो ये आलम इतना बदसूरत नहीं हो सकता जितना के हैं। अगर इतने लोग सही में भरोसा रखते है तो इनकी जिंदगी में जो खूश्बू आनी चाहिए इसका तो कही पता नहीं चलता, सिर्फ बदबू आती हैं। ये भरोसा झूठा है ये भरोसा ऊपरी है, ये भरोसा दिखावा हैं। तो इसे कहते है अंधी तकलीद। जो इंकलाब लाए आपकी जिन्दगी में वो अकीदत हैं। जो आपकी जिंदगी को ठहरे हुए बदबूदार नाले का पानी बना दे वो अंधी तकलीद हैं। जो मुल्क अंधी तकलीद पर है वो बंद डब्बे में सडते रहते हैं। अकीदत तो एक बहाव है एक तेज रफतार है।

अकीदत मंद होना कोई आसान बात नहीं। अकीदतमंद होने का मतलब है के खुद को बदलने की तैयारी। मगर लोग खुद की जिम्मेदारियो से पीछा छुड़ाने का मतलब अकीदत समझते हैं। मसलन किसी वली की मजार पर जाकर अपने जिम्मेदारी का टोकरा उनके सिर पर डाल आते है और इस अमल को वो अकीदत का नाम देते है। और इस तरह की अंधी अकीदत वह पीर, वली, खुदा दिगर पर करते है और अपने को पक्का अकीदतमंद की कतार मे ला खड़ा करते है। ये जरूर है जो खुद को बदलना चाहता है या कुछ करना चाहता है तो सारी कायनात इस का साथ देने तैयार हो जाती है।

नुक्ता : कमर अली दुरवेश पूना या कुतुबे आलम अहमदाबाद दिगर औलिया कराम के मजाराते पाक के अहाते मे गोल पत्थर, चपटा पत्थर या किसी और बनावट का हो जिसको चंद अकीदत मंदाने औलिया अपनी उँगलियों पर उठाते हैं। जिनको दोनो हाथो से उठाना मुश्किल होता है। जब हम उन बुजुर्ग का नाम लेते है मसलन ''या कमर अली दुरवेश'' उस वक्त उन के नाम की रूहानियत की तरंगे चंद सेकंड के लिए एक मकसूस दायरा बनाती है। जो इतने डायरे की जमीन की कुवते जाजिबा (gravity) को रोक-देती है। जिसकी वजहसे वह पत्थर चंद सेकंड के लिए हलका हो जाता है और पलक झपकते उठ जाता है।

नुक्ता : सोया हुआ आदमी कहीं नही पहुँचता जागा हुआ आदमी ही कही पहुँच पाता है। जागा हुआ इन्सान से मुराद वह आदमी जो जहाँ होता है वही होता है। अगर खा रहा है तो खा रहा है, अगर चल रहा है तो चल रहा है। और सोया हुआ आदमी का मन कही होता है, और

तन कही होता है। और वह खुद कही होता है। ख्वाब के माने भी यही होते है के आदमी का तन कही और मन कही किसी और जगह पर सैर कर रहा होता है। जागा हुआ आदमी ख्वाब नही देखता बलके हर वक्त हकीकत के रुबरू होता है। जागा हुआ इन्सान ही जी पाता है। सोया हुआ इन्सान गोया मुरदे के मानिंद होता है। जागा हुआ इन्सान अगर सोया भी हो तो उसके अंदर एक होश का दिया जलता रहता है। जैसा के हुजुर अकरम सल्लाहु - अलै - व - सल्लम ने फरमाया है मेरी सिर्फ आँखे सोती है मेरा दिल नही सोता यानि मेरे दिल में बेदारी का चिराग जलता रहता है।

कौल : हर पैदा होने वाला बच्चा अपने साथ एक सवाल लेकर पैदा होता है।

ओम (ॐ) क्या है ?

जिस तरह एहेले इस्लाम किसी काम के आगाज मे बिस्मील्लाह पढ़ते है या लिखते है। उसी तरह अहले हिन्दू चाहे किसी भी फिरके से ताल्लुक रखता हो किसी काम की इब्तीदा मे ओम कहते है, और लिखते है। इसके बगैर किसी भी काम के आगाज को वो बुरा (अशुभ) मानते है। यह संस्कृत जबान का लफ्ज है। हिन्दु मजहब के पंडित के कौल के मुताबीक लफ्जे 'ओम' को खुदा के मानो मे इस्तेमाल करते है। इस को ईश्वर, भगवान वगैरा के हम मानी समझते है। कुछ हिन्दु मजहब के पंडित इस मानी से इखतलाफ रखते है। चुनांचे पंडित गौरी दत ने ओम के तजकरो मे तहरीर किया है। प्रभु या परमात्मा के कारण ओम को नही बरता जाता हम इस को एक पवित्र (पाक) नाम जान कर लिखते है और बोलते है ताके

हमारे काम सिध्ध होजाए। (अज) रिसाला भक्ती लाहौर बाबत जुलाई (१९२२) मजमून बउनवान 'राम विद्या'

पंडित हरदयाल एम. ए. शास्त्री संस्कृत, इंग्लिश डिक्शनरी में ओम के मानी यू लिखते हैं।

Om, A holy word of sanskrit language which is showing different meaning, but True meanings are following : 1) A hand of god 2) A power of God & A strength of Nature, {The Sanskrit English Dictionary by Pt. Har Dayal M. A. Shastri Published by Mahatma Book Hall Bazar, Amritsar, Printed in General Electric Press Amritsar 1907.}Amritsar 1907.}

तर्जुमा : 'ओम' ये संस्कृत जबान का एक पाकिजा लफ्ज है जो मुखतलिफ मानी को जाहिर करता है लेकिन इस के हकीकी मानी हसबे जेल है। १) खुदा का हाथ २) खुदा की कूवत ३) फितरत की ताकत लेकिन - डॉक्टर के. सी. - चक्रवर्ती की लुगत मे ओम के मानी यूँ मरकूम है (मुलाहिजा हो संस्कृत इंग्लिश डिश्नरी मुसन्नीफ पंडित हरदयाल (M.A.) शास्त्री शाए करदह महात्मा बुक स्टॉल हॉल बजार अमृतसर मतबुआ जनरल इलेक्ट्रीक प्रेस अमृतसर १९०७.

मिस्टर K.C. चक्रवर्ती M.A. ने ओम के माने यह लिखे है।

Om : A Powerful hand of god. A powerful light of God. (A Modern Dictionary of Sanskrit and English, edited by K. C. Chakrawarti M.A. Publisher,

Narain Pustakalay. Delhi, Printed at the Eastern Public Press, Delhi (India 1918))

तर्जुमा : (ओम) खुदा का एक ताकतवर हाथ, खुदा की एक ताकतवर रोशनी (मुलाहिजा हो संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी मौलिफा के. सी. चक्रवर्ती एम ए. शाया करदह नारायन पुस्तकालय दिल्ला मतबुआ एडिशन पब्लिक प्रेस - दिल्ली -भारत (१९१८)

मिस्टर जगतलाल फाजिल संस्कृत ने ओम के माने यह लिखे है।

Om : The strenghened hand of nature coaching the world, the father of earth, the face of god.

तर्जुमा : १) ओम कुदरत का वो कूवत याफता हाथ जो निजामे आलम को चलाता है।

२) जमीन का बाप ३) खुदा का चेहरा

संस्कृत और हिन्दी के पंडित विश्वनाथ ने अपने किताब मे ओम के माने यह लिखे है।

''ॐ प्रमात्मा की एक शक्ति जो धरती, आकाश, और मनुष्य के काम चलाती है।''

तर्जुमा : ओम प्रमात्मा की कूवत जो जमीन, आसमान और सब इन्सान के कामो को चलाती है।

मन्दरजाबाला तमाम माने व मतालिब की रोशनी मे अब हमे यह देखना है कि खुदा का हाथ, खुदा की कूवत, कुदरत की ताकत, खुदा का ताकतवर हाथ वह कौन अजिमुशान हस्ती है। जिसकी

फजीलत मे ओम का लफ्ज वारिद हुआ है।

ब्राहत ऋषी की पेशंगोई कब्ल मसीह ५५००

बहुत पुराने जमाने की बात है। विलादते मसीह से पाँच सौ पाँच हजार बरस पहले की बात है। हिन्दुस्तान मे एक ऋषी (दुरवेश) जंगलो और पहाड़ो की खूब सियाहत फरमाया करते थे । नाम नामी ब्राहत और लकब कलाशन था। इनको चारो वैदो और छैयों शास्त्रों पर ना सिर्फ उबूर हासिल था बल्के वो आलिम बा अमल थे। बियाबानो और कोहसारो मे आसन जमा कर योग और ज्ञान-ध्यान मे मसरूफ रहते और कभी कभी आबादियो में जाकर भी धर्म का प्रचार करते थे। हिमालय के दामन मे इन दिनो बहुत बड़ा कस्बा था जो नरमबियाम के नाम से मशहूर था। एक रोज बराहत ऋषी इस कसबे मे चले गए उन्हे यह देखकर अफसोस हुआ के वहाँ के लोग खुदासनासी और नेकी बदी की तमीज से दूर है और इन्सानियत का जोहर इन मे मफकूद है। ऋषी जी दो चार दिन तो अपनी तपस्या और प्रार्थना मे लगे रहे और लोग इनके अजीब व गरीब आमाल को देखकर हैरान होते रहे। आखिर एक दिन इन्होने इन लोगो की दावत की जब कस्बे के तमाम आदमी जमा हो गए तो इन्होने आला किस्म के फूल और दूसरी नफीस तरीन चीजों से तवाजें की। इन लोगोने ऐसी चीजे कभी ख्वाब मे भी ना देखी थी इसलिए ऋषी जी को वो और भी हैरत से देखने लगे और कहने लगे यह कोई बड़ी पवित्र और पूज्य पाद हस्ती है। अब ऋषी ब्राहत जो कुछ भी इनसे कहते वह लोग इनके हुक्मो की तामिल करते और इनकी बातों पर खूब कान धरते थे एक दिन ऋषी जी ने फिर सबको जमा किया और हर किस्म की लजीज चीजे खिलाने के बाद कहाँ। ऐ मेरे सज्जनो यह बाते इन्सान मे तब ही पैदा

हो सकती है के वो अपने खालिक, अपने मालिक, अपने पालने वाले को माने और उसके हुक्म पर चले और इस की मरजी के काम करे। इस की इबादत बजा लाए और इस को खुश रखे। देखो मेरे मित्रों ये तुम को आकाश और धरती मे जो कुछ नजर आता है ये सब ईश्वर, भगवान की महिमा है। इसकी कुदरत है। इसकी तजल्लिया है। वह खुद तो दिखाई नही देता पर इस के जलवे हर वह इंसान देख सकता है जो इस से प्रेम करता है जो इस की प्रीत की आग दिल मे रोशन करता है। परमेश्वर ही जी की चाहना यही है के इस की पूजा पाठ में हर वक्त इंसान लगा रहे।

जो इंसान इसकी मर्जी पर चलते है और पापो, अपराधो को अपने करीब नही आने देते वह न सिर्फ दुनिया मे सुख पाते है बलके परलोक मे भी स्वर्ग की बाहारे लूटते है।

ब्राहत ऋषी के इस ज्ञान भरे उपदेश को सब लोग बडी तवज्जो, प्रेम से सुन रहे थे और ऐसा मालूम होता था के सब पर एक मस्ती सी छा गई है - ब्राहत ऋषी ने लोगो को आवाज दी।

ऐ मेरे सज्जनो और एक बात तुम्हे बता दू जो बडी अहम भी है और हैरत अंगेज भी और वह ये है के जब तक इस के प्यारो से मोहब्बत न लगाई जाएगी। जब तक ईश्वर परमात्मा के प्रेमियो से प्रीत न की जाएगी। इन का कहना ना माना जाएगा - इनकी फरमाबरदारी न की जाएगी और इन की शान और फजीलत और इन के दरजात की पहचान न रखी जाएगी-तब तक कोई तपस्या और कोई प्रार्थना और कोई योग किसी काम का नही। इन की मुहब्बत और अताअत के बगैर इंसान के करम और सारे तप (आमाल व इबादत) इकारत जाएगे।

सामईन में से किसी ने पूछा ऋषी महाराज वह परमात्मा के प्यारे कौन है? क्या वह महर्षि, मुनि व योगी जो गुजर चुके है ब्राहत ने कहा ''हाँ वह भी है जो गुजर चुके है''और अपनी तालिमात को संसार में फैला चुके है। इन सब की फरमाबरदारी करना और इन से प्रेम रखना भी फर्ज है - मगर इन के अलावा कुछ और भी है। इन का इलम तुम को नही है - तुम्हे क्या। बाज बड़े बडो को इन की खबर नही है। आम लोग इन पाक हस्तियो को नही जानते। लो सुनो। एक बहुत दूर समय में जबके संसार का आखीर होनेवाला होगा और वह आखरी जमाना कहलायेगा - तो व उस जमाने मे एक बहुत बडा महात्मा और महाराजाओ का महाराज पैदा होने वाला है जो हर प्रकार का अपना चमत्कार (मुअजजा) दिखायेगा इस के जन्म पर आग ठंडी (फारस के आतिश कदह की तरफ इशारा है) हो जायेगी बुत औंधे मुँह गिरेंगे, दरख्त, और पत्थर और हैवान इसको माथे टेकेंगे और हर चीज इसको नमस्कार (दरुदो सलाम) करेगी। इस बड़े महाराज का पवित्र नाम (पाक नाम) मुहम्मता (हजरत मुहम्मद सल्लालाहु अलैह व सलम)होगा। जिनकी ऊंगली से चंद्रमा को दो टुकड़े (शक्कुल कमर) करेगी और वह ईश्वर का हाथ कहलाएगे यानि (यदु अल्लाह)वह परमात्मा का मुखड़ा (वजहुल्लाह) होगा वह भगवान जी की (सूर्या) पलटा देगा जिस तरह परमेश्वर के बहुत से नाम है इसी तरह इनका भी एक नाम ओम होगा। (रिसाला सरसूती देहलीबाबत) माह मार्च १९६७ किताब सोरन शाखा - नेज - तरलोक पोथी मोवल्लिफा पंडित तरलोक चंद शाए कर्दह आर्य - बुक डेपो आगरा मतबुआ आर्य सिस्टम प्रेस आगरा १९३९)

हासिले मतलब पेशंगोई

इस पेशंगोई से साफ मालूम होता है के महात्मा ऋषी ब्राहत ने ओम की तशरीह मे किसी बहुत बड़े हस्ती की आमद की खबर दी है। हिन्दुओ की कदीम मजहबी किताबो मे हुजुरे अकरम सल्ललाहु अलैह व सल्लम को राजाओ का महाराजा बड़ा महाराज जिसको अहले इस्लाम सैय्यदुल अंबिया शैहेन्शाहे रिसालत कहते है और हुजूर का इस्मे मुबारक 'महामत' 'महामता' वगैरा लिखा है। इस पेशंगोई में कोई शक की गुंजाइश बाकी नही रही क्युकि बराहत ऋषी ने हुजूर के मक्सूस फजाइल बयान किए। मसलन हुजूर के जहुरे मुबारक पर इरान आतिशकदे का ठंडा हो जाना, काबे के बुतो का मुँह के बल गिरना और टूटना हजर व शजर, हैवानात का हुजूर को सज्दा करना और हुजुर के इशारे अंगरत से चाँद का शक होना वगैरह पेश किया है। इसी पेशंगोई मे ऋषी ब्राहत ने आप के औसाफ लिखे है। जो ओम के माने के मुशाबाह है जैसे - १) ईश्वर का हाथ यानि खुदा का हाथ अल्लाह तआला ने हुजूर के हाथ को अपना हाथ फर्माया। इस लिहाज से हुजूर का हाथ अल्लाह का हाथ है २) ईश्वर का मुखड़ा खुदा का चेहरा हदीसे पाक मे हुजूर फर्माते है। (जिसने मुझे देखा उसने हक को देखा) इस लिहाज से हुजूर का चेहराए मुबारक वजूह अल्लाह है।

३) भगवान की शक्ती खुदा की ताकत शक्कुल कमर के मुअज्जजा से यह बात वाजेंह हो जाती है के हुजूर खुदा की ताकत कूवतुल्लाह है।

४) डूबे हुए सूरज को पलटाने वाला कौन है? तारीख इस्लाम के औराक इस मुअज्जजा के गवाह है के हुजूर सल्ललाहु अलैह व सलम ने डूबा हुआ सूरज पलटाया।

कलंकी पुरान से एक और सबूत

हिन्दुओ की मशहूर किताब में है के कलंकी अवतार कलंकी पुरान ब्रहमण के घर पैदा होंगे। उनका मुकामे पैदाइश शंबल, उनके बाप का नाम विष्णूदास, उनके माँ का नाम सोमती होगा।

(कलंकनी पुराण-मतूबा सादिक अल मुताबा मीरठ सफा नं. (५,६,७)

पुरान में लिखा है कि कलंकी औतार ब्रहमण के घर जनम लेगें। जिस तरह मुसलमानो में सय्यदों का मुकाम है उसी तरह हिन्दुओं मे ब्राह्मण का मुकाम है। इस लिहाज से हुजूर सल्लल-लाहु-अलैह व सलम सैयद के घर तवल्लुद होंगे। इसके दूसरे माने मंदिर में जो पूजा पाठ करते है। उसे भी ब्राहमण का दर्जा दिया जाता है। इस लिहाज से हुजूर सल्लल-लाहु-अलैह-व-सलम के दादा हदरत् अब्दुल मुतल्लिब काबे के मुतवल्ली थे। शंबल अरब को कहते है। विष्णूदास जिसके माने खुदा का बंदा इसको अरबी मे अब्दुल्लाह कहते है। यह कलंकी औतार के वालिद का नाम है। सोमती जिस के मानी अमानत दार जिस को अरबी मे आमिना कहते है। जो कलंकी औतार की माँ है।

अब हिन्दुओ की इस मुसतनद किताब से बात पूरी तरह से वाजेह हो जाती है के ऋषी ब्राहत की पेशंगोई और पुरान की पेशंगोई हुजुर की तरफ इशारा करती है।

लफजे 'ओम' की शकल लफजे अली से काफी मिलती जुलती है।

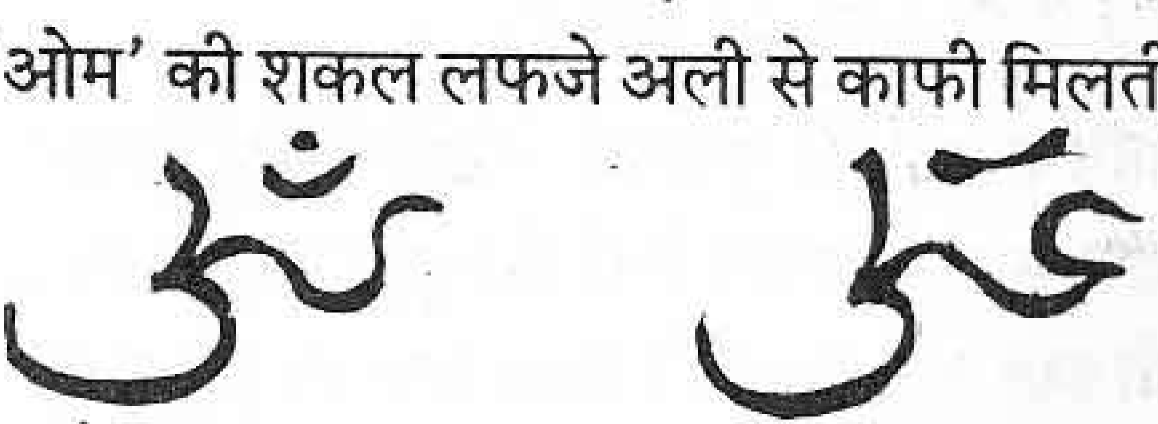

ओम के कई मानी मे हजरत अली से हम मानी होते है, मसलन मिट्ठी का बाप - अबूतुराब, अल्लाह का चेहरा - करमल्लाहू वजहू, खुदा की ताकत - कुवतुल्लाह सैफअल्लाह जिस तरह अल्लाह का नाम भी अली और इसके वली का नाम भी अली। इसी तरह संस्कृत

और अरबी (खुसूसन अरबी कोफी) में इसका इस्म मुबारक अली करीबन एक ही जैसे रसमुल खत मे लिखा जाता है। हालांकि कहाँ संस्कृत और कहाँ अरबी। मगर अल्लाह पाक को अपने वलीये पाक का मुअज्जजा दिखाना था के इसने ओम के संस्कृत लफ्ज और अली के अरबी लफ्ज की सूरत और शक्ल मे एक गुना मुशाबेहत और मुमासेलत पैदा करदी चुनाँचे संस्कृत मे ओम को ॐ की शक्ल मे लिखते है। और अरबी मे कोफी रसमुल खत मे अली को अली की सूरत मे लिखा जाता है। आप दोनों अल्फाज ॐ संस्कृत और 'अली अरबी' की शक्ल व सूरत को गौर से देखिए। ''ॐ को अली और अली को ॐ'' पढ़ा जा सकेगा। यू भी दोनों जबानों के अल्फाज का तजजिया करके देख लिजिए। फरमाइए क्या बना? अली या कुछ और अलावा बरे। अगर हिजाजी, नजदी, तहामी, मिसरी रसमूल खतो को ही लिया जाए तो भी थोड़े से फर्क के साथ (वो भी सिर्फ एक दनदाने का फर्क) और अली के अल्फाज आपस में मिलते-जुलते है मसलन संस्कृत का ॐ, अली और अरबी का अली बताइए कोई खास फर्क है? कुछ भी नही बाज हिंदू हजरात जो ॐ को हिन्दी में ॐ लिखते है। ये संस्कृत का मुसतनद और कदीम रसमुल खत नहीं बल्कि भाषा रसमुल खत है। सही संस्कृत रसमुल खत में ओम की शक्ल वही है जो ऊपर दर्जे जेल है।

इसी तरह काठियावाडी की गुजराती, मराठी जबान, बंगाली जबान, आसामी जबान, ब्रहमनी जबान में भी बिल्कुल मामूली इकतलाफ के साथ ओम को इसी तरह लिखते है जिस तरह संस्कृत में लिखा जाता हैं।

خاکپائے پیرفہمی خواجہ شیخ محمد فاروق شاہ قادری الچشتی افتخاری

معروف پیر عفی عنہ

KHAKPA-E-PEER FEHMI KHWAJA SHAIKH MOHAMMED FAROOQ SHAH

QADRI AL CHISHTI IFTEKHARI MAROOF PEER A.A.